● bordernewsmirror@gmail.com
● पटना, दिल्ली व कोलकाता से एक साथ प्रसारित
● द्विभाषिक समाचार पत्र

BORDER NEWS MIRROR BNM to the point...

02 पटना के ईडी कार्यालय में लालू यादव से हुई पूछताछ

04 मरीज की मौत के बाद क्लिनिक किया सील अवैध अस्पताल संचालकों में दहशत

बॉर्डर न्यूज मिरर

...खबरों से समझौता नहीं

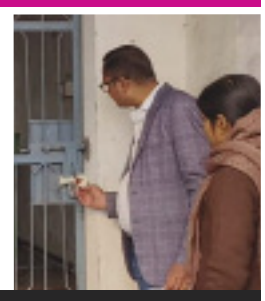

● पटना, मंगलवार, 30 जनवरी 2024 www.bordernewsmirror.com ● पृष्ठ: 08, मूल्य: 5 रूपए ● वर्ष: 04, अंक: 342

सरकार ने सिमी पर पांच वर्ष के लिए प्रतिबंध लगाया

नयी दिल्ली। सरकार ने स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) पर प्रतिबंध लगाते हुए उसे पांच वर्ष के लिए 'विधिविरुद्ध संगठन' घोषित कर दिया है। गृह मंत्रालय ने सोमवार को एक बयान जारी कर कहा कि सिमी को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1967 की धारा 3(1) के अंतर्गत पांच साल की अवधि के लिए विधिविरूद्ध संगठन घोषित कर दिया है। सिमी पर इससे पहले पिछला प्रतिबंध 31 जनवरी 2019 को लगाया गया था। बयान में कहा गया है कि सिमी, देश में आतंकवाद को बढ़ावा देने, शांति और सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ने में लगा है जो देश की संप्रभुता, सुरक्षा और अखंडता के लिए हानिकारक है। सिमी और उसके सदस्यों के खिलाफ विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1967 सहित कानून की विभिन्न धाराओं के तहत कई आपराधिक मामले दर्ज हैं।

हिजाब पर बयान, छात्राओं का थाने के बाहर प्रदर्शन

विधायक से माफी मांगने और नेता के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की

जयपुर। जयपुर के एक सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली मुस्लिम छात्राओं ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विधायक बालमुकुंद आचार्य के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर सोमवार को सुभाष चौक पुलिस थाने के सामने प्रदर्शन किया। उनका आरोप है कि विधायक ने स्कूल में एक कार्यक्रम के दौरान छात्राओं के हिजाब पहनने पर आपत्ति जताई थी। कई स्कूली छात्राओं ने आज सुभाष चौक थाने के बाहर सड़क पर जाम लगा दिया और स्थानीय भाजपा विधायक के खिलाफ नारेबाजी की। उन्होंने विधायक से माफी मांगने और नेता के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की। प्रदर्शनकारी छात्राओं ने संवाददाताओं से कहा, ''विधायक वार्षिक समारोह में भाग लेने के लिए हमारे

स्कूल आए थे। हमने उनका स्वागत किया। हमें बताया गया कि हिजाब की अनुमति नहीं है। विधायक ने हमसे पूछा कि हिजाब पहने बच्चियां सांस कैसे लेती हैं। बाबा को माफी मांगनी चाहिए।'' आदर्श नगर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस विधायक रफीक खान ने इस मुद्दे को सदन में उठाने की भी कोशिश की, लेकिन विधानसभा अध्यक्ष ने उन्हें बोलने की अनुमति नहीं दी और इस बारे में उनकी टिप्पणी को विधानसभा की कार्यवाही से हटाने को कहा। हवामहल सीट से भाजपा विधायक बालमुकुंद आचार्य ने मुस्लिम छात्राओं के प्रदर्शन के सवाल पर संवाददाताओं से कहा, ''मैंने विद्यालय की प्राचार्य से पूछा था कि सरकारी विद्यालय में जब 26 जनवरी का कार्यक्रम हो या वार्षिक उत्सव हो तो दो प्रकार की पोशाक का प्रावधान है क्या? प्राचार्य ने कहा नहीं है.. मानते नहीं हैं।'' उन्होंने कहा, '' विद्यालय में कार्यक्रम के दौरान छोटी बच्चियां और आठवीं, दसवीं कक्षा की सभी बच्चियां या तो हिजाब में थी या बुर्के में। वहां दो तरह का माहौल नजर आ रहा था तो मैंने प्राचार्य से पूछा था कि विद्यालय का ड्रेस कोड बना हुआ है? '' आचार्य ने कहा '' मेरा सवाल बिल्कुल वाजिब है जब सरकारी विद्यालय का अपना एक ड्रेस कोड बना हुआ है, नियम बना हुआ है उस अनुरूप सारा अध्ययन हो रहा है। स्कूल होता किस लिये है.. नियम सिखाने के लिए और वहां इस प्रकार का माहौल बना रखा था वो विचारणीय है।'' उन्होंने कहा, ''स्कूलों में दो प्रकार के ड्रेस कोड क्यों? मैंने मदरसों में जाकर तो नहीं बोला कि मदरसों की ड्रेस बदल दो.. वहां का नियम है.. उस नियम अनुरूप होना चाहिए।''

140 करोड़ भारतीयों की शक्ति से चुनौती को चुनौती देते हैं: मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पद के तनाव से दूर रहने और बड़े काम करने की शक्ति का खुलासा करते हुए आज कहा कि वह निराशा और नकारात्मक सोच से दूर रहते हैं और 140 करोड़ भारतीयों के विश्वास से शक्ति हासिल करके चुनौती को चुनौती देते हैं। इससे वह भ्रम से दूर हो कर स्पष्ट निर्णय ले पाते हैं और हर संकल्प पूरा कर पाते हैं।

श्री मोदी ने यहां भारत मंडपम में परीक्षा पे चर्चा (पीपीसी) के 7वें संस्करण के दौरान छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ संवाद के दौरान छात्रों के सवालों के जवाब में यह बात कही। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर प्रदर्शित कला और शिल्प प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। श्री मोदी ने छात्रों को आयोजन स्थल यानी भारत मंडपम के महत्व

को समझाया और उन्हें जी20 शिखर सम्मेलन के बारे में बताया जहां दुनिया के सभी प्रमुख नेता इकट्ठे हुए और दुनिया के भविष्य पर चर्चा की। प्रधानमंत्री तनाव से कैसे निपटते हैं और सकारात्मक रहते हैं, यह सवाल तमिलनाडु में चेन्नई के मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र एम वागेश ने प्रधानमंत्री से पूछा। उत्तराखंड में ऊधमसिंह नगर के डायनेस्टी मॉडर्न गुरुकुल एकेडमी की छात्रा स्नेहा त्यागी ने प्रधानमंत्री से पूछा 'हम आपकी तरह सकारात्मक कैसे हो सकते हैं?' उन्होंने कहा कि यह जानकर अच्छा लगा कि बच्चे प्रधानमंत्री के पद के दबावों को जानते हैं। उन्होंने कहा कि हर किसी को अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

परीक्षा से जुड़े कई प्रश्नों के बाद प्रधानमंत्री ने कहा कि कोई भी उनसे बचकर प्रतिक्रिया कर सकता है, ऐसे लोग जीवन में बहुत कुछ हासिल नहीं कर पाते हैं। "मेरा दृष्टिकोण जो मुझे उपयोगी लगा वह यह है कि मैं हर चुनौती को चुनौती देता हूं। मैं चुनौती के पार होने का निष्क्रिय रूप से इंतजार नहीं करता। इससे मुझे हर समय सीखने का मौका मिलता है। नई परिस्थितियों से निपटना मुझे समृद्ध बनाता है।" उन्होंने यह भी कहा, 'मेरा सबसे बड़ा विश्वास ये है कि मेरे साथ 140 करोड़ देशवासी हैं। यदि 10 करोड़ चुनौतियाँ हैं, तो अरबों समाधान भी हैं। मैं खुद को कभी अकेला नहीं पाता हूं और सब कुछ मुझ पर है, मैं हमेशा अपने देश और देशवासियों की क्षमताओं से अवगत रहता हूं। यह मेरी सोच का मूल आधार है।" उन्होंने कहा कि हालांकि उन्हें सबसे आगे रहना होगा और गलतियां भी उनकी होंगी लेकिन देश की क्षमताएं ताकत देती हैं। उन्होंने कहा, "जितना मैं अपने देशवासियों की क्षमताएं बढ़ाता हूं, चुनौतियों को चुनौती देने की मेरी क्षमता बढ़ती है।" प्रधानमंत्री ने गरीबी के मुद्दे का उदाहरण देते हुए कहा कि जब गरीब खुद गरीबी हटाने की ठान लेंगे तो गरीबी चली जाएगी। उन्होंने कहा, "उन्हें पक्का घर, शौचालय, शिक्षा, आयुष्मान, पाइप से पानी जैसे सपने देखने के साधन देना मेरी ज़िम्मेदारी है।

उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण खत्म करने की चल रही है साजिश : राहुल

नयी दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में अनुसूचित जाति, जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग को नौकरियों में मिलने वाले आरक्षण को खत्म करने की साजिश चल रही है और कांग्रेस कभी ऐसा नहीं होने देगी। श्री गांधी ने सोमवार को एक्स पर पोस्ट कर कहा, "यूजीसी के नए ड्राफ्ट में उच्च शिक्षा संस्थानों में एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग को मिलने वाले आरक्षण को ख़त्म करने की साजिश हो रही है। आज 45 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में लगभग 7,000 आरक्षित पदों में से 3,000 रिक्त हैं और जिनमें सिर्फ 7.1 प्रतिशत दलित, 1.6 प्रतिशत आदिवासी और 4.5 प्रतिशत पिछड़े वर्ग के प्रोफेसर हैं। आरक्षण की समीक्षा तक की बात कर चुकी भाजपा आरएसएस अब ऐसे उच्च शिक्षा संस्थानों में से वंचित वर्ग के हिस्से की नौकरियां छीनना चाहती है। उन्होंने कहा, यह सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने वाले नायकों के सपनों की हत्या और वंचित वर्गों की भागीदारी ख़त्म करने का प्रयास है। यही 'सांकेतिक राजनीति' और 'वास्तविक न्याय' के बीच का फर्क है और यही भाजपा का चरित्र है।कांग्रेस ये कभी होने नहीं देगी - हम सामाजिक न्याय के लिए लड़ते रहेंगे और इन रिक्त पदों की पूर्ति आरक्षित वर्गों के योग्य उम्मीदवारों से ही कराएंगे। इससे पहले कांग्रेस के असंगठित क्षेत्र के श्रमिक एवं कर्मचारी संगठन के अध्यक्ष डॉ उदित राज तथा अनुसूचित जाति विभाग के प्रमुख राजेश लिलोठिया ने यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-यूजीसी की एक गाइडलाइन आई जिसमें कहा गया कि विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर के पदों पर अनुसूचितजाति-जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवार उपलब्ध नहीं हैं।

कार्यवाही कलकत्ता हाईकोर्ट खंडपीठ-एकल पीठ आदेश विवाद

सुप्रीम कोर्ट ने मामले को अपने पास स्थानांतरित किया

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने पश्चिम बंगाल में एमबीबीएस की पढ़ाई में दाखिले के लिए कथित फर्जी जाति प्रमाण पत्रों के इस्तेमाल के आरोपों की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से जांच कराने के मामले में कलकत्ता उच्च न्यायालय की 'खंडपीठ-एकल पीठ' आदेश विवाद के बाद स्वतः संज्ञान सुनवाई करते हुए संबंधित मामलों को सोमवार को अपने पास स्थानांतरित कर लिया।

मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति बी आर गवई, न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस की संविधान पीठ ने पश्चिम बंगाल सरकार को राज्य में एमबीबीएस प्रवेश के लिए उपयोग किए जाने वाले कथित फर्जी अनुसूचित (एससी)/अनुसूचित जनजाति (एसटी) प्रमाणपत्रों के संबंध में राज्य पुलिस द्वारा शुरू की गई जांच की स्थिति विवरण दाखिल करने का निर्देश दिया।

कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति अभिजीत गंगोपाध्याय की एकल पीठ द्वारा एक खंडपीठ के आदेश को अवैध घोषित करने और एक अन्य (उस खंडपीठ के) न्यायाधीश पर पश्चिम बंगाल की सत्ताधारी पार्टी के राजनीतिक हितों की रक्षा के लिए काम करने का आरोप लगाने का मामला सामने आने के बाद शीर्ष अदालत के दखल देने की अभूतपूर्व स्थिति उत्पन्न हुई थी।

शीर्ष अदालत की विशेष पीठ ने उच्च न्यायालय के समक्ष संबंधित मामलों की कानूनी कार्यवाहियों पर शनिवार को रोक लगा दी थी और कहा था कि इस मामले पर सोमवार को सुनवाई करेगी।

शीर्ष अदालत के समक्ष पश्चिम बंगाल सरकार का पक्ष रख रहे वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने दलील दी कि एकल न्यायाधीश की पीठ इन मामलों की सुनवाई जारी रखेगी और वह भविष्य में भी ऐसा करेगी।

इस पर पीठ ने कहा, 'हमें आक्षेप नहीं लगाना चाहिए...आखिरकार हम एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के साथ काम कर रहे हैं...हम यहां जो कुछ भी कहते हैं, वह उच्च न्यायालय की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाला नहीं होना चाहिए।'

MADAN RAJ NURSING HOME
HOSPITAL ROAD MOTIHARI, (BIHAR)
Contact No.- 9801637890, 6200450565, 9113374254

पटना के ईडी कार्यालय में लालू यादव से हुई पूछताछ

पटना। रेलवे में नौकरी के लिए जमीन लेने के मामले में राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के पटना स्थित दफ्तर में सोमवार को 11 बजे पेश हुए। ईडी की टीम ने लालू यादव से सुबह 11:30 बजे से पूछताछ करनी शुरू की। लालू की बेटी एवं राज्यसभा सांसद डॉक्टर मीसा भारती भी उनके साथ ईडी कार्यालय पहुंची थी लेकिन ईडी कार्यालय के अंदर मीसा भारती को इंट्री नहीं मिली। प्रवर्तन निदेशालय के कार्यालय के बाहर राजद के कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ लगी है।

ईडी के अधिकारी पिछले नौ घंटे से लालू यादव से पूछताछ कर रहे हैं। इस बीच उन्हें सुबह का नाश्ता, दोपहर का खाना और शाम के नाश्ते के अलावा समय समय पर दी जाने वाली दवाइयां भी दी गयी। मीसा भारती ने उन्हें समय समय पर आकर उन्हें दवाइयां दी।

पूछताछ के लिए दिल्ली के ईडी मुख्यालय से अधिकारी आये हुए हैं। लालू यादव से पूछताछ की प्रक्रिया के बारे में अभी तक कोई अधिकृत जानकारी तो नहीं दी गयी है लेकिन बताया जा रहा है कि लालू यादव के केन्द्रीय रेल मंत्री रहने के दौरान हुए नौकरी के बदले जमीन मामले में ईडी के अधिकारियों ने कई सवाल पूछे हैं। पूछा गया कि रेलवे में नौकरी के नाम पर जमीन लेकर कितने और कहां कहां लोगों को नौकरी दी गयी। ईडी कार्यालय के बाहर पत्रकारों से बात करते हुए मीसा भारती ने कहा कि हमारा परिवार जांच एजेंसी को पूरा सहयोग करता है। जब भी सीबीआई, इनकम टैक्स या ईडी बुलाती है तो हम लोग पहुंचते हैं और उनके सवालों का बखूबी जवाब देते हैं।

राजस्व अधिशेष वाला राज्य बनाना राजग सरकार की प्राथमिकता : भाजपा

पटना। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आज स्पष्ट कर दिया कि बिहार को राजस्व अधिशेष वाला राज्य बनाना मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा की उपस्थिति में सोमवार को यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि डबल इंजन सरकार बिहार को बेहतर बनाने के लिए राजस्व बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करेगा। उन्होंने कहा कि सरकार अधिक से अधिक राजस्व सृजन करने के लिए सख्ती से कार्रवाई शुरू कर रही है, जिससे इस राज्य और इसके समाज की समग्र प्रगति में मदद मिलेगी।

सम्राट चौधरी अयोध्या में खोलेंगे अपनी पगड़ी

बीएनएम@पटना

डेढ़ साल से सिर पर पगड़ी बांध कर चल रहे भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी, जो रविवार को बदलते राजनीतिक परिदृश्य में नीतीश कुमार के पार्टनर बन गये हैं, उनकी चर्चा बिहार की बदली सियासत के बीच काफी तेज हो गयी है। ये चर्चा इस बात को लेकर के है कि बिहार में भाजपा के साथ मिलकर नीतीश कुमार ने तो अब एनडीए की सरकार बना ली लेकिन सम्राट चौधरी अपने सिर से पगड़ी कब हटायेंगे।

एक समय था जब सम्राट चौधरी ने नीतीश कुमार को कुर्सी से बेदखल करने की शपथ ली थी। उन्होंने कसम खाई थी कि नीतीश कुमार को सत्ता से हटाने के बाद ही पगड़ी उतारेंगे।

सोमवार को पार्टी कार्यालय में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में जब पत्रकारों ने उनसे सवाल पूछा कि अब आप पगड़ी कब उतारेंगे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने कहा कि जब मैंने यह पगड़ी बांधी थी, तो उस समय मेरी मां का निधन हुआ था।

उसी समय भाजपा ने मुझे विरोधी दल के नेता के रूप में काम करने की जिम्मेदारी सौंपी। ऐसे में पार्टी के सम्मान और उसके वजूद के लिए मेरे लिए उस समय भावुक क्षण था, जब मैंने वह बात कही थी। अब मैं अपने मुरेठा को प्रभु श्रीराम के चरणों में समर्पित करने के लिए अयोध्या जा रहा हूं। साथ ही अपना मुंडन भी कराऊंगा। मेरे लिए पार्टी से ऊपर कुछ भी नहीं है।

जिसके शिक्षा मंत्री सचिव से लड़ते रहे, वे ले रहे शिक्षक नियुक्ति का श्रेय: सुशील मोदी

बीएनएम@पटना

राज्यसभा सांसद सुशील कुमार मोदी ने कहा कि पिछली सरकार में जिस पार्टी के शिक्षा मंत्री विभागीय सचिव से लड़ते रहे, चार महीने कार्यालय नहीं गए और रामचरित मानस पर टिप्पणी कर द्वेष फैलाते रहे, उसके नेता तेजस्वी यादव के सत्ता से बाहर होने पर 1.22 लाख शिक्षकों को नौकरी देने का श्रेय लेने की कोशिश कैसे कर रहे हैं। इसमें मंत्री का क्या रोल था। सुशील मोदी ने सोमवार को बयान जारी कर कहा कि राज्य सरकार की नियुक्तियां मुख्यमंत्री के नीतिगत निर्णय और उनकी सम्मति से हुईं, जबकि राजद केवल शेखी बघारने में लगा है। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव बताएं कि महागठबंधन सरकार कैबिनेट की पहली बैठक में दस लाख लोगों को सरकारी नौकरी देने का वादा 17 महीनों में पूरा क्यों नहीं कर सकी। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव ने स्वास्थ्य मंत्री के नाते बिहार के अस्पतालों को अधमरा कर आईसीयू में भर्ती करा दिया। वे 17 महीनों में 17 डॉक्टर भी नियुक्त नहीं कर पाए। तेजस्वी यादव न क्रिकेट में सफल हो पाए, न खेल मंत्री के नाते 17 महीनों में पटना के मोइनुल हक स्टेडियम को जर्जर हालत से उबार सके। मात्र 75 खिलाड़ियों को नौकरी देकर वे अपनी पीठ थपथपा रहे हैं।

सुशील मोदी ने कहा कि पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को नौकरी देने की नीति एनडीए सरकार के समय से लागू है, लेकिन हर बात का श्रेय वे लोग लेना चाहते हैं, जिनकी सरकारें घोटाले, भ्रष्टाचार और माफियाओं को संरक्षण देने के लिए कुख्यात रहीं।

केंद्र सरकार नफरत की राजनीति करती है : राहुल गांधी

किशनगंज। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं सांसद राहुल गांधी ने केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार पर नफरत की राजनीति करने का आरोप लगाया और कहा कि केंद्र सरकार नफरत की राजनीति करती है जबकि उनकी पार्टी मुहब्बत, इज्जत एवं भाईचारे की बात करती है। 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के तहत किशनगंज पहुंचे कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने खगड़ा स्टेडियम में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि केंद्र की मोदी सरकार नफरत और हिंसा की राजनीति करती है। देश को बांटने की बात करती है। उन्होंने कहा, "हम मोहब्बत इज्जत भाईचारे की बात करते है। केंद्र सरकार नफरत की राजनीति करती है।

सियासत 30 जनवरी रंगभूमि मैदान पूर्णिया में होगा कार्यक्रम

भारत जोड़ो न्याय यात्राकी तैयारी जोरों पर

पूर्णिया। 30 जनवरी 2024 को कांग्रेस नेता सांसद राहुल गांधी का रंगभूमि मैदान पूर्णिया में कार्यक्रम निर्धारित है। कार्यक्रम के लिए कांग्रेस पार्टी के स्थानीय एवं राज्य तथा नेशनल कमेटी के लोग सक्रिय होकर तैयारी कर रहे हैं। जिला प्रशासन ने भी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये है।

सोमवार को जिला पदाधिकारी कुन्दन कुमार ने पुलिस अधीक्षक उपेंद्र वर्मा एवं अनुमंडल पदाधिकारी एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर पूर्णिया तथा संबंधित पदाधिकारी के साथ सांसद राहुल गांधी के कार्यक्रम स्थल की विधि व्यवस्था तथा उनके आने वाले मार्ग की यातायात व्यवस्था को लेकर फोर्ड कंपनी चौक, गिरजा चौक तथा रंगभूमि मैदान का जायजा लिया।

मौके पर उपस्थित वरीय पुलिस पदाधिकारी तथा अनुमंडल पदाधिकारी एवं

अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर पूर्णिया तथा संबंधित पदाधिकारी को विधि व्यवस्था एवं यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करने तथा पार्किंग एवं ड्राप गेट निर्माण को लेकर कई आवश्यक निर्देश अधिकारी द्वारा दिए गए।

कार्यक्रम स्थल रंगभूमि मैदान के बगल में स्थित ऊंचे भवन एवं टावर के पास पुलिस बल एवं दंडाधिकारी की प्रतिनियुक्ति करने का निर्देश दिए ।कार्यक्रम स्थल तथा मंच की जांच बम निरोधक दस्ता तथा डॉग स्कॉर्ट से करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारी को दी गई।

राष्ट्रीय स्तर के नेता अखिलेश सिंह सहित पूर्णिया जिला अध्यक्ष छोटू सिंह सहित सारे कांग्रेस के नेता एड़ी चोटी का जोर लगाए हुए हैं। लगातार बैठकों का दौर चल रहा है। सर्किट हाउस के अलावा विभिन्न होटल में देश प्रदेश के नेता रुके हुए हैं।

कल राहुल गांधी अररिया से 9 बजे निकलकर पूर्णिया जीरोमाइल पैदल आएंगे फिर पूर्णिया के रंगभूमि मैदान में 1 :30 बजे उनका संबोधन होगा । पूर्णिया से कोढ़ा होते हुए कटिहार फिर लाभा होते हुए पुनः बंगाल प्रवेश कर जाएंगे। कार्यक्रम में कर्नाटक हिमाचल प्रदेश तथा तेलंगाना के मुख्यमंत्री के अलावे कई एमएलसी एमपी तथा विधायक के साथ-साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे सहित कई बड़े नेताओं जो महागठबंधन अथवा इंडिया गठबंधन के हैं आने का प्रोग्राम है।

M.S. MEMORIAL PUBLIC SCHOOL
BALGANGA, ARERAJ ROAD, MOTIHARI
Contact No.- 9939047109, 9431203674

दस दिनों पूर्व नाबालिग हत्याकांड का दोषी पुलिस की गिरफ्त से बाहर

गोबरहिया दोन के ग्रामीणों ने किया हल्ला बोल प्रदर्शन

बीएनएम@बगहा

आदिवासी नाबालिग हत्याकांड का दस दिनों बाद भी खुलासा नहीं होने और हत्यारों की पहचान नहीं होने को लेकर ग्रामीणों ने हल्ला बोल किया। माईकिंग कराते हुए ग्रामीणों ने पुलिस से तत्काल हत्यारों के गिरफ्तारी की मांग किया है।

दरअसल नक्सल प्रभावित गोबरहिया थाना क्षेत्र अंतर्गत शेरवा दोन की जंगल से बेचन महतो की 14 वर्षीय पुत्री मुन्नी का शव पेड़ से लटका हुआ मिला था। जिसके बाद परिजनों ने हत्या कर शव को फंदे से लटकाने की प्राथमिकी दर्ज कराई थी। घटना के एक पखवारे बाद भी अब तक पुलिस के हाथ खाली हैं। लिहाजा ग्रामीणों के सब्र का बांध टूट गया है और ग्रामीणों ने एकजुट होकर सिस्टम के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए थानाध्यक्ष का घेराव किया। इतना हीं नहीं अक्रोशित ग्रामीणों ने पूरे इलाके में माइकिंग कराते हुए अपराधियों के गिरफ्तारी समेत मामले का अविलंब उद्भेदन करने का मांग किया। इस दौरान थानाध्यक्ष ने लोगों की काफी समझा बुझाकर उनका आक्रोश शांत कराया और जल्द से जल्द मामले के उद्भेदन का आश्वासन देते हुए कहा की पीड़ित परिवार को शीघ्र प्रशासन न्याय दिलाएगी।

फ्रेंडली क्रिकेट मैच में ब्वायज क्लब विजयी

बीएनएम@केसरिया। प्रखण्ड क्षेत्र के कुंडवा उर्दू हाई स्कूल के खेल मैदान में रविवार को स्व सलाम हाशमी लीजेंड फ्रेंडली क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन समाजसेवी अतीक अहमद खान ने फीता काटकर किया। इस आयोजन में गोंछी ब्वायज क्लब बनाम स्पोर्ट्स क्लब कुंडवा के बीच मैच खेला गया।

टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी गोंछी ब्वायज क्लब की टीम ने निर्धारित 16 ओवर में 210 रन बनाये। जवाब में उतरी स्पोर्ट्स क्लब कुंडवा की टीम निर्धारित ओवर में 152 रन पर सिमट गई। जिसके बाद ब्वायज क्लब की टीम ने 59 रन से जीत दर्ज की। उपस्थित अतिथियों द्वारा विजेता और उप विजेता को ट्रॉफी और मेडल देकर सम्मानित किया गया।

वहीं मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार ब्वायज क्लब के कप्तान कृष्णा कुमार को दिया गया। इस अवसर पर राजद नेता अवधेश यादव, सैयद साजिद हुसैन, रिंकू पाठक, जदयू नेता इफ्तेखार खान, अफसर कमाल, आसिम जफर खान, अशफाक खान, सुजीत गिरी, नबील खान, आजाद हाशमी, अमजद अली खान, अयाज खान, निजामुद्दीन खान सहित अन्य उपस्थित रहे।

जनीशक्ति की लक्ष्मी खत्री को एसडीएम ने सम्मानित किया

बगहा। बगहा स्थित जनीशक्ति एनजीओ की लक्ष्मी खत्री को एसडीएम अनुपमा सिंह ने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया है । बतादें,यह क्षेत्र थारू और आदिवासी बहुल क्षेत्र है । जहां शिक्षा और रोजगार के साथ साथ सामाजिक रूप से अति पिछड़ा क्षेत्र है । जनीशक्ति एनजीओ इसी क्षेत्र की महिला दलित समाज के सशक्तिकरण और उसके उत्थान के लिए कार्य करती है। खासकर एसटी एसी महिलाओं के रोजगार स्किल के लिए प्रोत्साहित करना और उसके शसक्तीकरण के लिए मार्ग प्रसस्त करना जनीशक्ति कि खास कार्य नीति है । लक्ष्मी खत्री ने बताया कि बगहा स्थित अनुमंडल कार्यालय परिसर में 26 जनवरी को हो रहे समारोह के दौरान एसडीएम अनुपमा सिंह ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया है ।

आज होगा जॉब कैम्प का आयोजन

बेतिया। श्रम संसाधन विभाग द्वारा जिला नियोजनालय, पश्चिम चम्पारण, बेतिया के प्रांगण में आज जॉब कैम्प का आयोजन किया जाना है।आज 11.00 बजे से अपराह्न 04.00 बजे तक इच्छुक अभ्यर्थी जॉब कैम्प में नियोजक से जॉब के विषय में जानकारी प्राप्त कर अपना आवेदन/बायोडाटा जमा कर सकते हैं। इच्छुक अभ्यर्थी का एनसीएस पोर्टल पर निबंधन कराना अनिवार्य है। जिला नियोजन पदाधिकारी अंकित राज द्वारा बताया गया कि जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय के दिशा-निर्देश के आलोक में लगातार जिले में जॉब कैम्प, रोजगार-सह-मार्गदर्शन मेला का आयोजन कर बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार मुहैया कराने का कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में पुनः 30 जनवरी 2024 को भी जिला नियोजनालय, बेतिया के प्रांगण में जॉब कैम्प का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम कथा, वृतचित्र, लघु फ़िल्म, उत्कर्ष लेखन,निर्देशन, लेखक को दिया जाएगा अवार्ड

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन 2 मार्च से

बगहा। इंडो नेपाल सीमा से सटे नेपाल स्थित चितवन नेशनल निकुंज के पर्यटन नगरी सौराहा में 2 मार्च से 5 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय चलचित्र फेस्टीवल का शुभारंभ होने जा रहा है। पांच दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में आठ देश के चलचित्र कर्मी शामिल होंगें।

महोत्सव में उत्कृष्ठ चलचित्र, उत्कृष्ठ लेखन और उत्कृष्ठ निर्देशन के लिए अवार्ड दिया जायेगा। बतादें,नेपाल चितवन के पर्यटन नगरी सौराहा में पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का अयोजन 2 मार्च से किया जा रहा है।

महोत्सव में दक्षिण एशिया क्षेत्र के आठ देश के कथानक चलचित्र, वृत चित्र तथा लघु चलचित्र का प्रदर्शन किया जायेगा। फिल्म महोत्सव के संबंध में रविवार को पत्रकार सम्मेलन के अन्तर्गत जानकारी देते हुऐ क्याराभान नेपाल के अध्यक्ष और फिल्म निर्देशक विमल पौडेल ने बताया की समृद्धि के पुर्वधार पर्यटन का आधार के मूल नारा के साथ सौराहा के चित्रसरी खेल मैदान में नेपाली चलचीत्र के माध्यम से चितवन सहित नेपाल के पर्यटन विकास के लिए 2 मार्च से पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के फिल्म महोत्सव का अयोजन किया जा रहा है। महोत्सव में चलचित्र,पर्यटन तथा स्थानीय परंपरागत खाना सहित एक सौ से ज्यादा स्टॉल लगाया जाएगा।महोत्सव में 50 हजार से ज्यादा दर्शक के शामिल होने और महोत्सव में दो कड़ोड़ से ज्यादा का कराबोर होने का अनुमान है। रत्न नगर महापालिका के मुख्य सहयोग से आयोजित एवं पांच दिन तक चलने वाले इस महोत्सव में आठ देश के चलचित्र कर्मियो की उपस्थिति रहेगी। दक्षिण एशिया के कथानक चलचित्र, वृत चित्र तथा लघु चलचित्र का प्रदर्शन महोत्सव में किया जाएगा और उत्कृष्ठ फिल्म,उत्कृष्ठ निर्देखक तथा उत्कृष्ठ लेखन के लिए अवार्ड भी दिया जाएगा। महोत्सव में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों की प्रस्तुति होगी।सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत राजू परियार, जीवन शर्मा,,शांति श्री परियार, शीला आले, पशुपति शर्मा, हिमला शर्मा, टिका प्रसाद, सरोज विरही,बज्योति मगर, एलिना चौहान सहित तमाम ख्याति प्राप्त कलाकार के द्वारा प्रस्तुति दिया जाएगा।

मोतिहारी सेन्ट्रल जेल में किशोर कैदियों की पहचान को लेकर जागरूकता शिविर का आयोजन

बीएनएम@मोतिहारी

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) नई दिल्ली के निर्देशानुसार जेल में किशोर की पहचान करने और उन्हे कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए सोमवार को मोतिहारी सेन्ट्रल जेल में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

मौके पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव अरुण कुमार सिन्हा ने बताया कि 18 वर्ष से कम आयु का व्यक्ति कानून की दृष्टि में बालक है जिसके संरक्षण के लिए कानूनी प्रावधान किये गए हैं। ऐसे उन्हे इसकी जानकारी देना अति आवश्यक है।

उन्होने बताया बालकों को न्याय दिलाने हेतु किशोर न्याय अधिनियम 2015 बनाया गया है। इसकी जानकारी देने व बाल कैदियो की पहचान के लिए 28 जनवरी से 27 फरवरी 2024 तक नालसा द्वारा मोतिहारी सेन्ट्रल जेल में विशेष शिविर का आयोजन किया गया है।

घरेलू विवाद में देवर ने की भाभी की हत्या

मोतिहारी। जिले के मेहसी थाना क्षेत्र के मोहब्बत छपरा गांव में घरेलु विवाद में एक 30 वर्षीय महिला की उसके देवर ने कुल्हाड़ी से गर्दन पर वार कर हत्या कर देने का मामला सामने आया है। घटना रविवार के देर शाम की बतायी गयी है। मृतक की पहचान मोहब्बत छपरा गांव निवासी नसीम अख्तर उर्फ लड्डू की 30 वर्षीय पत्नी समीना खातून के रूप में हुई है। शव को मेहसी थाना पुलिस सोमवार की सुबह बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए मोतिहारी भेज दिया है।

ग्रामीणों के अनुसार हैदर अली के बड़े पुत्र नसीम उर्फ लड्डू व उसके छोटे पुत्र नाजीर अली के बीच पूर्व से ही घरेलु विवाद चल रहा था। घटना के रात्रि दोनों परिवार खाना बना रही थी,उसी समय मृतका गाली दे रही थी और आग तापने के लिए छोटा भाई नाजीर अली जलावन फार रहा था। देखते देखते बात बिगड़ी और वह कुल्हाड़ी से अपनी भाभी पर प्रहार कर दिया। जिसे घायलवस्था में परिजन उसे एक निजी अस्पताल ले गए जहाँ उसे मृत घोषित कर दिया गया। वही इसकी सूचना पर पहुंची पुलिस ने सोमवार की सुबह शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए मोतिहारी भेज दिया है।

मृतक के पति मोहम्मद नसीम उर्फ लड्डू ने मेहसी थाना में छोटा भाई मो नाजीर अली,मो आबिद ,भावो तान्या खातून,बहन नजमा खातून माँ सायदा खातून सहित पांच को नामजद किया है। घटना की पुष्टि करते हुए थाना अध्यक्ष कृष्णा कुमार सिंह ने बताया कि मृतका के ननद नजमा खातून से पूछताछ के लिए थाना लाया गया है।

मरीज की मौत के बाद क्लिनिक किया सील

परिजनों ने चिकित्सक सहित अन्य पर लगाया हत्या का आरोप, मचा हड़कम्प

अमृतेश कुमार ठाकुर

बीएनएम@केसरिया। प्रखण्ड मुख्यालय स्थित डॉ आर के दूबे के क्लीनिक में इलाज के दौरान महिला की हुई मौत मामले के बाद क्षेत्र के अधिकतर अवैध नर्सिंग होम से बैनर-पोस्टर हट गया है। सोमवार को कई ऐसे निजी नर्सिंग होम, जाँच घर व अल्ट्रासाउंड केंद्र बंद पाये गये। बता दें कि संग्रामपुर थाना क्षेत्र के मिश्रग्राम की पूजा देवी की मौत डॉ आर के दूबे के क्लिनिक में शनिवार को हो गई थी। तीन माह की गर्भवती पूजा को पेट दर्द की शिकायत पर यहाँ लाया गया था। इस मामले में मृतका के पति अभिषेक कुमार मिश्रा ने थाना में आवेदन देकर चिकित्सक सहित अन्य पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप लगाया है। इधर, बीडीओ मनीष कुमार सिंह, सीएचसी की चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अर्चना व थानाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह की मौजूदगी में उक्त क्लीनिक को रविवार को सील किया गया।

घटना के बाद अवैध नर्सिंग होम के विरुद्ध छापेमारी, हड़कंप

इस क्लीनिक में शनिवार को हुई एक महिला की मौत के बाद प्रशासन हरकत में आया। जिसके बाद रविवार को प्रखण्ड मुख्यालय स्थित कई निजी नर्सिंग होम, जाँच घर व अल्ट्रासाउंड सेंटरों पर ताबड़तोड़ छापेमारी की गई। इस क्रम में सीएचसी के समीप संचालित आर्यन हॉस्पिटल में सुन्दरापुर की एक प्रसूता सहित कई अन्य मरीज पाये गये। प्रसूता के परिजन ने बताया कि सीएचसी की एएनएम श्रीकांति के द्वारा इस अस्पताल में भेजा गया है। छापेमारी टीम ने इस निजी अस्पताल से करीब आधा दर्जन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। वहीं छापेमारी से कई अवैध नर्सिंग होम, जाँच घर, अल्ट्रासाउंड केंद्र व दवा दुकानों में ताला लटक गये। इस कार्रवाई से अवैध नर्सिंग होम संचालकों में हड़कंप मच गया। छापेमारी टीम में शामिल बीडीओ मनीष कुमार सिंह ने बताया कि अवैध रूप से संचालित नर्सिंग होम में प्रसव कराये जाने की सूचना मिली। इस आलोक में कार्रवाई की गई। जिसमें अस्पताल संचालकों के द्वारा कोई वैध कागजात प्रस्तुत नहीं किया गया। साथ हीं चिकित्सक भी मौजूद नहीं थे। उन्होंने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की कर्मी के मरीजों को निजी अस्पताल में भेजने की भूमिका की जाँच की जाएगी। अभियान चला कर ऐसे अवैध संस्थानों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। छापेमारी टीम में बीडीओ के अलावा प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अर्चना, थानाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह, एसआई ओम पाल सहित अन्य शामिल थे।

फलफुल रहा अवैध नर्सिंग होम का कारोबार

प्रखण्ड क्षेत्र में तकरीबन तीन दर्जन से अधिक अवैध नर्सिंग होम का संचालन होता है। जहाँ ग्रामीण क्षेत्र के गरीब मरीजों का आर्थिक दोहन कर उनके जीवन से खिलवाड़ किया जाता है। मरीजों को ऐसे स्वास्थ्य संस्थाओं तक पहुँचाने की जिम्मेवारी कुछ एजेंट की होती है। जिसे प्रति मरीज पूर्व से तय रकम अस्पताल संचालक द्वारा दी जाती है। वहीं ऐसे कई जाँच घर व अल्ट्रासाउंड केंद्र भी संचालित है जहाँ बिना किसी प्रमाणिकता के जाँच रिपोर्ट दिया जाता है। जिसके आधार पर संबंधित चिकित्सक इलाज करता है। वहीं इन नर्सिंग होम, जाँच घर व अल्ट्रासाउंड केंद्रों में अप्रशिक्षित कर्मियों को रखना सबसे चिंतनीय है। ऐसे संस्थाओं के विरुद्ध पूर्व में भी कई बार छापेमारी तो की गई है लेकिन कार्रवाई के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति कर मामले को दबा दिया जाता है। जिसके कारण ऐसे संचालकों का मनोबल बढ़ जाता है। दवा दुकान की भी लगभग वही स्थिति है। क्षेत्र के अधिकांश दवा दुकान बिना लाइसेंस के संचालित है। जहाँ कई तरह के अवैध दवा की बिक्री धड़ल्ले से की जाती है।

खेल मोतिहारी एमजीसीयू में खेल सप्ताह के चौथे दिन का हाल

पुरुष क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ आयोजन, बजी तालियां

मोतिहारी। प्रथम सेमी फाइनल मैच रॉयल कॉमर्स vs अनस्ट्पेबल हंक के बीच खेला गया। अनस्ट्पेबल हंक के कैप्टन ने टॉस जीत कर बॉलिंग करने का निर्णय लिया। जिसमे रॉयल कॉमर्स के खिलाड़ियों ने 12 ओवर में 9 विकेट खो कर 60 रन का लक्ष्य दिया। वही विपक्षी टीम के तेज गेंदबाज आदित्य कुमार ने बेहतरीन गेंदबाजी से अकेले ही 5 विकेट ले कर सामने वाले टीम की कमर तोड़ दी। जिससे उनके टीम को एक आसान लक्ष्य मिला। और जब वहीं अनस्ट्पेबल हंक के टीम का 6 ओवर में 5 विकेट पर 54 रन तक स्कोर पहुंच चुका था। उसके बाद 8 वें ओवर के तीसरी गेंद पर ही अनस्ट्पेबल हंक ने 5 विकेट से मैच को जीत लिया। जिसमें शानदार प्रदर्शन करते हुए, दिनेश हुड्डा ने अपने टीम के तरफ से 27 रनों की एक शानदार पारी खेली। और वहीं आदित्य कुमार ने शानदार प्रदर्शन और 5 विकेट हासिल लिए। जिससे आदित्य को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया।

दूसरा सेमी फाइनल मैच

दूसरा सेमी फाइनल मैच CS स्ट्रॉम ब्रेकर्स vs MGCU लायंस के बीच खेला गया। CS स्ट्रॉम ब्रेकर्स ने टॉस जीत कर बॉलिंग करने का निर्णय लिया। बैटिंग करने उतरी MGCU लायंस के टीम ने पहली ही ओवर में 20 रन बनाए। और CS स्ट्रॉम ब्रेकर्स ने तीसरी ओवर में 2 विकेट लेकर दोनो ओपनर को पवेलियन भेज दिया। उसे बाद टीम को काफी अच्छी स्तिथि में बृजेश ले गए। बृजेश ने 11 वें ओवर तक रन को 129 तक पहुंचा दिया था। और अंतिम ओवर में कुल 134 रन बनाए पाए। जिसमे बृजेश ने अकेले 70 रनों की एक महत्वपूर्ण पारी खेल कर अपने टीम को एक बढ़िया स्थिति में पहुंचा दिया। अब CS स्ट्रॉम ब्रेकर्स टीम को जीत के लिए 12 ओवर में 135 रनों की आवश्कता होगी। पहले ओवर में CS&IT स्ट्रॉम ब्रेकर्स ने 1 विकेट खो कर 9 रन बनाए। फिर अगले ही ओवर में बृजेश ने अपने ओवर में 1 और विकेट ले कर CS स्ट्रॉम ब्रेकर्स को एक जोरदार झटका दिया।

व्यंग्य: वामन का मंतव्य!

अनूप श्रीवास्तव

भरोसा शब्द भले ही तीन अक्षरों का है लेकिन अवसर आने पर यह पूरे त्रिलोक को नाप सकता है,भले ही आप कहें कि इसके पीछे वामनी राजनीति है । 'वामन' का मन्तव्य कभी त्रिलोकेश्वर से रहा होगा, पर अब मन्तेश्वर के इर्द गिर्द सिमट चुका है ।

कहते हैं त्रिलोकी नाथ ने जब समुद्र मंथन किया था, रत्न निकलने तक सभी को उनपर भरोसा था लेकिन त्रिलोक सुंदरी और अमृत घट यानी सत्ता सुंदरी और नौकरशाही को हथियाने की नौबत आते ही देव दानवों का भरोसा दो फाड़ हो गया जिसके चलते विष्णु भगवान को भी तमाम पापड़ बेलने पड़े । उन्हें स्वयम सत्ता सुंदरी का मुखौटा लगाना पड़ा। नतीजा यह हुआ कि सत्ता पाने के लिए दोनों पक्ष प्रतिबद्ध हुए। राहु और केतु समझदार निकले उनकी भूमिका आज भी यथावत है। भरोसा उनके बीच कन्दुक की तरह इधर उधर भागता दिखाई दे रहा है।

दरअसल राहु और केतु ही आज की नौकरशाही है जो देव और दानवों को प्रोटोकाल का मुखौटा दिखाकर भरोसेमंद बनी हुई है लेकिन इसी बीच सोशल मीडिया तो प्रोटोकाल का भी बाप निकला और देखते ही देखते खुद को 'किंगमेकर'साबित करने पर तुल गया और इसे साबित करते हुए उसने एक आम आदमी को सड़क से उठाकर राजसिंहासन पर बिठा दिया, यही नहीं एक अच्छे खासे नेता को चाय वाले का चोला पहना कर सत्ता के शिखर पर पहुंचा दिया। वैसे सोशल मीडिया कोई नई ईजाद नहीं है। इसे केवल पत्रकारिता और नौकरशाही का गठजोड़, ऐसी पत्रकारिता जो हवा में गांठ लगाने में माहिर हो।

खबरों के मन माफिक कसीदे काढ़ने में सक्षम हो साथ ही सत्ता में सेंध लगाने में भी माहिर हो । पत्रकारिता का ऐसा अद्भुत मुखौटा देखकर नौकरशाही के भी कसबल ढीले हो गए। नौकरशाही को लगा अगर उसने इस मुखौटे को वाकओवर न दिया तो उनका अपना मुखौटा भी उतर जाएगा । पत्रकारिता पहले भी ऐयारी थी और आज भी है। सोशल मीडिया का मन्तव्य भी एक तरह से ऐयारी ही है।

इसे इस तरह से समझें-जब राजा भोज की दुनिया भर में तूती बोल रही थी अचानक न जाने किस दुरभि सन्धि से एक किस्सा गो ऐयार दूरदराज से प्रकट हुआ और उसने सिंहासन बत्तीसी की बत्तीस कहानियां सुनाकर राजा भोज के आस्तित्व को दीन दुनिया से बाहर कर दिया और किस्सा कहानी के अमूर्त नायक को चक्रवर्ती सम्राट के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। राजा भोज का बजूद भी नहीं बचा। इतिहास गया तेल लाने। सोशल मीडिया ने यह साबित कर दिया कि उसकी तथाकथित ऐयारी बड़े बड़ों को पानी पिला सकती है। नौकरशाही को भी धूल चटा सकती है। तभी से नौकर शाही के साथ नेताशाही भी नतमस्तक है ।

बस एक दूसरे का मुखौटा बचा रहे । भरोसा का भूत सिर पर चढ़ कर बोलता है, न देखता है, न सुनता है, न समझता है,बस हवा में ही गांठे लगाता रहता है। राजनीति कूटनीति के भरोसे चलती है। पहले भी कूटनीति सेठाश्रयी होती थी और ब्याजनीति के भरोसे चलती थी अब बदलते समय मे भरोसा गड्ड मड्ड हो रहा है। सरकारों के भरोसे का भी यही हाल है। एक सरकार पांच साल के भरोसे पर आती है। भरोसा टूटते ही सत्ता के खेल से बाहर होते देर नहीं लगती।

कभी सरकार गरीबों के भरोसे थी सरकार बदली तो राम भरोसे हो गयी। अब हाल यह है कि राम मंदिर बने न बने सरकार उनके नाम पर बनती बिगड़ती रहती है। खैर भरोसा मंदिर पर हो न हो,कभी वह सीबी आई के भरोसे था। अब अदालत के भरोसे पर टिक गया है जो फंस गए वे न्याय की देवी को अंधा बता रहे हैं और जो बच गए वे स्वयम को अदालत की दूरदृष्टि के कायल जता रहे हैं। अब चाहे सूखे का मुद्दा हो या डांस बार अथवा बैंकों के घोटाले का भरोसा दरकता रहता है । जनता का भरोसा कब तक किस पर टिका रहता है यह समय ही बताएगा।

धर्म तक से लोगों के भरोसे पर ग्रहण लगने की स्थिति आ गयी है। विधायिका और न्याय पालिका पर लगते ग्रहण को देखते हुए न्याय पालिका पर ही भरोसा बचा है। दूसरा और विकल्प भी क्या है। भरोसे के खम्बे में चाहे कितनी ही दरारे हों कहलाता भरोसे का खम्भा ही है। भरोसे का कन्धा न हो तो भरोसे के धंधे का क्या होगा। धंधे का खेल खेलने वालों को भरोसा बनाये रखने की जिम्मेदारी होती है। देश सेवा जब धंधे में बदल गया हो तो अंधे को भी मालुम है कि बिना मेवे के देश सेवा करने का जमाना लद गया। अगर मेवा भी सड़ा निकल गया तो भरोसे को कन्धा बदलते देर नहीं लगेगी। यह दौर ही दूसरा है। अब राजनीति भी कंधे पर बंदूक लेकर चलती है। वे दिन लद गए जब टोपी को लाठी बनाकर कोई नेता निकलता था तो बड़ी से बड़ी ताकतें उसका लोहा मानती थी। उसकी टोपी लाठी को भी मात करती थी।

अब राजनीति भले ही कितनी ही मजबूत हथियारों से समृद्ध हो गई हो पर वह भरोसे की लाठी कहीं भी नज़र नहीं आ रही है।उल्टे भरोसे पर गाँठपर गांठ लगती जा रही है । भरोसा किस घाट जाकर लगेगा ? खुदा ख़ैर करे !

सी पी 5,सेक्टर सी अलीगंज पत्रकार कालोनी लखनऊ।
मो. 9335276946

विधवा जीवन क्यूँ त्रासदीपूर्ण?

शाहाना परवीन शान

...बेवा, राँड, मृतभर्तृका व विधवा आदि नामों से जाना जाने वाला यह शब्द अपने गंभीर व सोचनीय प्रश्न लिए सदियों से समाज में कंलक के साथ जी रहा है। विधवा से तात्पर्य उस स्त्री से है जिसका पति मर चुका हो। एक महिला जिसके पति की मृत्यु चाहे कभी भी हुई हो पर उस स्त्री के माथे पर एक कलंक लग जाता है कि इसका पति मर चुका है और वह बिना पति की है। अब यह स्त्री पूर्ण रुप से बेकार है या यह भी कहा जा सकता है कि बिना पति स्त्री रद्दी है।

जिस प्रकार एक पुरुष का अपना अस्तित्व होता है उसी प्रकार एक पत्नी का भी अपना स्वयं का अस्तित्व है, फिर उसे पति के जीवन के साथ क्यों जोड़ा जाता है ? क्यों बार बार उसे यह अहसास करवाया जाता है कि जब तक पति जीवित था तब तक उसकी पहचान थी, पति के मरते ही सब कुछ खत्म ? विधवा शब्द कहकर सम्बोधित क्यूँ करें ? यदि एक स्त्री का पति मर जाता है तो उसे लोगों द्वारा विधवा कहकर क्यों सम्बोधित किया जाता है ? अरे भाई ! जब पति की अपनी पत्नी मर जाती है और वह विधुर हो जाता है तब उसे तो कोई विधुर नहीं कहता फिर एक स्त्री को क्यों बार बार विधवा कहकर कमज़ोर बना दिया जाता है ? या यह अहसास कराया जाता है कि वह अब बहुत क्षीण हो चुकी है।

यदि इसका भावनात्मक रुप देखा जाए तो विधवा शब्द एक पत्नी को पति को खो देने के बाद उसके जीवन के सबसे भारी नुकसान की ओर इशारा करता है। देश के कुछ हिस्सों में बल्कि कहना चाहिए कि शायद दुनिया भर में विधवाओं के साथ बर्बरता पूर्ण व्यवहार किया जाता है। विधवा स्त्री के लिए कपड़े भी निश्चित कर दिए जाते हैं : विधवा स्त्री के लिए कपड़े भी निश्चित कर दिए जाते हैं कि उन्हें क्या पहनना है और क्या नहीं जबकि एक विधुर पति के लिए इस प्रकार की कोई रोक -टोक देखने को नहीं मिलती कि उसे क्या पहनना है और क्या नहीं पहनना ?

विधवा घर के बाहर कदम रखती है तो लोगों के द्वारा अपने घरों व खिड़कियों से झांक कर देखा जाता है जबकि विधुर पर कोई ध्यान नहीं देता। सफेद कपड़े पहने और मायूसी में लिपटी महिलाओं के चेहरे की उदासी किसी को दिखाई नहीं देती। हाँ, दिखाई देता है तो विधवा होकर किसी गैर पुरुष से उसका बात कर लेना, विधवा होकर किसी के साथ हंस- बोल देना, विधवा होकर स्वतंत्रता के साथ जी लेना। क्यूँ ऐसा है कि विधवाओं को कोई कुछ नहीं समझता ?

अरे ! वे पहले एक इंसान हैं बाद में विधवा है। विधवा होना कोई पाप तो है नहीं फिर घृणा कैसी ? इतना भेदभाव क्यूँ ? एक किस्सा याद आ रहा है सुनंदा का विवाह पांच साल पहले दीपक के साथ हुआ था। दोनो एक बस दुर्घटना में घायल हो गये थे पत्नी बच गई और पति की कुछ दिनों के बाद मौत हो गई। सुनंदा को अभागन का नाम देकर घर से बाहर विधवा आश्रम में भेज दिया गया। कोई पूछे कि सुनंदा की ग़लती बताओ, अपराध बताओ, क्या किसी के पास इस बात का कोई उत्तर है ? अगर हो जाता विपरीत तो क्या विधुर पति को भी घर से बाहर भेज दिया जाता ? उसे भी विधुर आश्रम में रखा जाता ? पर एक क्षण के लिए यदि हम सोचें तो विधुर आश्रम तो कहीं है ही नहीं ? विधवा स्त्री की छवि शुरू ही से ऐसी बना दी जाती है कि वह दूर खड़ी सबसे अलग दिखाई पड़ती है। कोई उससे ढंग से बात नहीं करना चाहता, गले लगाना या गले मिलना तो दूर कहीं कहीं पर तो उसे घर में आने की इज़ाजत नहीं होती बल्कि उसे वैवाहित स्त्रियों से अलग रखा जाता है। उसको मांगलिक कार्यों में शामिल नहीं होने दिया जाता। यहाँ तक की अपनी बेटी के विवाह तक में विधवा मां शामिल नहीं हो सकती। किसने बनाए ये नियम ?कौन है इसका कर्ता धर्ता ? कोई पुरुष है या कोई स्त्री ?अगर कोई है तो इतना बताए कि ये नियम क्यों व कब बनाए गए ? इसमें भेदभाव क्यों किया गया ? जब एक स्त्री को त्रासदीपूर्ण जीवन जीने को बाध्य किया जाता है तो पुरुष को क्यों नहीं ? विधवा स्त्री अपने पहनावे से भीड़ में अलग दिखाई पड़ जायेगी पर विधुर पुरुष की क्या पहचान है ? विधुर को कोई कैसे पहचानेगा ?

उसे न तो इस तरह संबोधित किया जाता है और न ही वह अपनी पत्नी को खोने के बाद अपने पहनावे को बदलता है। हमारा प्रश्न आप सबसे यही है कि क्या यह आवश्यक है कि 'पत्नी' को 'विधवा' कह कर सम्बोधित किया जाए ? जबकि अपने पति को खो देने के बाद भी वह एक पत्नी बनी हुई है। सभी रूपों और औपचारिकताओं में अपने पति के नाम को अपने से चिपकाए हुए हैं। किसी भी स्त्री के घर के पते या बैंक की किताब या स्कूल आदि पर जीवित पति का तो नाम लिखा ही होता है पति के मरने के बाद भी वह नाम स्त्री से जुड़ा रहता है। जिस महिला का पति मर चुका हो उसको पति के नाम के साथ ही सम्बोधित किया जाता है उदाहरण,, पत्नी स्वर्गीय श्री....की।

यहाँ हमारे कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि जब मरने के बाद पति पत्नी से प्रत्येक क्षेत्र में जुड़ा है तो यह विधवा शब्द का सम्बोधन क्यों ? सफेद वस्त्र क्यों ? आप सब लोग जो इस लेख को पढ़ रहे हैं ज़रा एक क्षण के लिए सोचिए और विचार कीजिए कि ऐसे में एक विधवा स्त्री को समर्थन की आवश्यकता है, सहानुभूति की नहीं। स्वतंत्र हर इंसान हैं फिर विधवा क्यों नहीं ? आजादी के साथ जीने का अधिकार सबके पास है। नारी जब स्वतंत्र होगी तभी इस समाज व संसार का मुकाबला कर पायेगी। अब उन विधवा महिलाओं के सामने दो तरह की जिम्मेदारी आ चुकी हैं पति की भी और अपनी तो हैं ही उसके पास।

विधवा नारी नहीं कमजोर,
उसको शक्तिशाली बनाना होगा।
समर्थन देंगे जब सब मिलकर
बेकार नियमों को हटाना होगा।
शक्ति का रुप समझी जाती नारी
फिर चाहे हो जैसी भी,विधवा हो या हो सधवा,
हर परिस्थिति में उसका साथ निभाना होगा।
गहरा प्रश्न आप सबसे मेरा....

अनकही कहानी – एक भूरी नारी

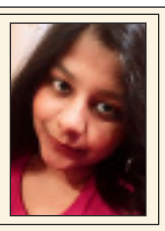

बचपन हमने देखा बड़ी मुश्किल से है,
कोई लड़की हुई है सुनके दफना देता है,
कोई लड़की हुई है सुनके जीते जी मार देता है।

बचपन से जब बाल्यावस्था आए,
कोई लड़की बाल मज़दूर का काम कर रही है,
तो कोई सडक पर झोली फैलाये एक पैसे के लिए तरस रही है।

बाल्यावस्था से यौवनावस्था जब आए,
तो देखा पढ़ने के ज़माने में छोटी बच्ची किसी का घर संभाल रही है,
कहीं वर्तन धो रही है तो कहीं कोई रास्ते पर धक्कें खा रहीं है।

यौवनावस्था से प्रजनन आयु जब आए,
जब मासिक धर्म शुरू होता है उसका दर्द जैसे प्रेग्नेंट के दर्द सा होता है,
कोई रंग रूप को देखते हैं तो कोई आपके जीवन में अपनी नाक घुसाते हैं।
समाज ताना कस्ते हैं और आजकल कहीं बाहर जाने का डर रहता है,
कहीं ससुराल मारते हैं तो कहीं कोई समझता नहीं है।

प्रजनन आयु के बाद जब प्रसव अवस्था में आए,
प्रेग्नेंट अवस्था में एक इंसान के अंदर एक नन्ही सी जान बस्ती है,
उस बीच का दर्द जो है 9 महीने का और उसके बाद प्रेगनेंसी के वक़्त
जो दर्द मानो की 206 हड्डियां टूट रही हो, जैसे लगता है।

प्रेगनेंसी के बाद जब माँ बन जाते है,तब अपने लिए कुछ नहीं
मगर सब परिवार और बच्चों के लिए केवल करती है।
इसलिए माँ के शब्द में संसार बस्ता है।

जब वही माँ बूढी हो जाती है,
तो बच्चे धक्के खाने के लिए कहीं सडक पर छोड़ देते हैं,
या तो वृद्धाश्रम में छोड़ जाते है,
कोई अनादर करता है कोई जुर्म करता है।

मरने के अवस्था में आयु जब आए,
तब न पूछने वाले भी दिखावा कर जाते हैं,
मरने के बाद जो बेटे पूछते नहीं वही सिर्फ़ 4 कंधा देने आ जाते हैं।

जीवन एक स्त्री की न कभी सरल थी न कभी है,
ज़माना है बुराइयों और अत्याचारों का ?
यहाँ एक बेटी को अच्छे से बड़ा करना भी बहुत कठिन है।

रीमा पांडेय कोलकाता

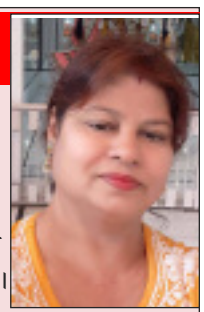

ग़ज़ल

यहाँ मुश्किल भरी राहों को अब आसान क्या करते,
पड़े थे पाँव में छाले रहें अंजान क्या करते।
अकेले ही बचा लाई मैं कश्ती के मुसाफ़िर को
मिरी हिम्मत के आगे दोस्तो तूफान क्या करते।
नहीं आसां है पढ़ लेना हरिक कागज़ के टुकड़े को
भला तस्वीर में इंसान की पहचान क्या करते
बचाया है इसे ग़म से सहारा भी न तेरा है,
भला फिर अपना दिल तेरे पे हम कुर्बान क्या करते।
कभी मांगा नहीं कुछ भी वो ऐसा ही अनोखा था,
वो था खुद्दार तो उसपे कहो अहसान क्या करते।
कभी पूरे नहीं होते मचलते ही ये रहते हैं तो
रख कर अपने दिल में हम हसीं अरमान क्या करते।
चले जाना है रीमा एक दिन सब छोड़कर सबको
सजा कर क़ीमती घर में भला सामान क्या करतें।

व्यंग्य: आई लव मीडिया

अशोक व्यास

आई लव इण्डिया यहाँ तक तो ठीक है और हम सब इण्डिया को लव करते हैं यह भी सब जानते हैं लेकिन आई लव मीडिया का नारा कोई कैसे बुलंद कर सकता है? मीडिया को भी कोई लव करता है? कैसी बात कर रहे हैं आप हमारा तो मोटो है आई लव इंडिया और आप बीच में आई लव मीडिया कहां से ले आए. रुकिए, रुकिए मेरी बात ध्यान से सुनिए असल में क्या है कि हम भारतीय बहुत उत्सव प्रिय हैं यह बात तो पूरा विश्व जानता है और जब हम चोबीस गुणा तीन सौ पेंसठ दिन उत्सव मनाएंगे तब उसे दिखायेंगे ही नहीं तो क्या फायदा इतनी उछल कूद करने का. जब दिखाने की बात आती है तब हमें मीडिया की जरूरत होगी वही तो है जो सब कुछ दिखाता है, सुनाता है, बताता है, कुछ भी नहीं छुपाता।

मीडिया चाहे कोई भी हो प्रिंट मीडिया हो, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हो या सोशल मीडिया इतने सारे मीडिया हैं तब यह हाल है कि सब को दिखने दिखाने का समान अवसर नहीं मिल रहा है. सोचिए पुराने जमाने में क्या होता होगा, तब एक ही मीडिया काम करता था वह था मुख मीडिया, एक मुख से बात निकली और निकलकर एक से दो, दो से चार और चार से आठ मुख से निकलकर कानों तक पहुँच कर कई गुना होकर चारों दिशाओं में फ़ोकट में आपको सेलिब्रिटी बना देती थी. वैसे यह मीडिया आज भी बाकायदा सक्रियता से अपनी भूमिका निभा रहा है. इतने सारे मीडिया होने के बावजूद यही मीडिया है जो आपकी प्रशंसा या बुराई को आगे बढ़ाने का काम लगातार कर रहा है। हां इस मीडिया से प्यार के प्रसार के कारण इतना जरुर हुआ है कि हम बहुत सोशल होकर मुख मीडिया से मुखपोथी (फेसबुक) तक आ गए हैं. इसलिए अन्य मीडिया के साथ बहुत सारे सोशल मीडिया हो गए हैं. मीडिया का रोल पहले भी था, आज भी है, पहले भी हम उससे प्यार करते थे, आज भी हम उससे प्यार करते हैं, कोई स्वीकार नहीं करता है लेकिन में वाइरल विडियो की कसम खाकर कहता हूं आई लव मीडिया.

हम जीवन के किसी भी आश्रम में रहते हों मीडिया ही हमारे जीवन को आसरा दे रहा है नेता अभिनेता, खिलाडी, उपदेशक आदि को बिना मीडिया के जीवन निस्सार लगता है भले ही प्रवचन कर्ता संसार को माया मोह कहते रहें. सुबह उठ कर सच्चा भारतीय 'कराग्रे वसते लक्ष्मी' का मंत्र पढ़कर हथेली नहीं देखता बल्कि 'कर मध्ये मोबाइल' लेकर सोशल मीडिया का अपडेट देखता है.

मुझे याद है जब मैं छोटा था तब समाचार पत्रों में किसी बच्चे के गुमने की सूचना दी जाती थी उसका फोटो भी छपा रहता था जिसमें लिखा जाता था कि 'घर आ जाओ बेटा तुमसे कोई कुछ नहीं कहेगा' उससे प्रेरणा लेकर मैंने अपने पिताजी से कहा कि 'मेरा फोटो भी आपको अखबार में छपवाना पड़ेगा'. वह भोंहे चढ़ाकर कर कहने लगे' क्यों तुम क्या मेरिट में आये हो जो तुम्हारा फोटो अख़बार में छपाना पड़ेगा'।

बेचारे पिताजी, जैसे आज भोले होते हैं वैसे ही उस समय भी होते थे, पहले भी उन्हें कुछ अता-पता नहीं रहता था, बच्चों की भावनाओं को पहले भी नहीं समझते थे और आज भी समझ नहीं पाते हैं. मैंने उनके ज्ञान में वृद्धि करते हुए कहा-'जब मैं घर से भाग जाऊंगा, तब आप मेरा फोटो अखबार में छपवा देना, कम से कम इसी बहाने अखबार में मेरा फोटो तो आ जाएगा'. यह सुनकर उन्हें इतना गुस्सा आया कि उन्होंने मुझे घर से भगा भगा कर मारा और कहने लगे' खानदान की नाक कटवाने पर तुला है हमारे घर से आज तक कोई नहीं भागा और आप चले हैं भागकर नाम रोशन करने'.

उसके बाद टीवी के दौर में भी वही इतिहास दोहराया गया तब एक ही अपना प्यारा सरकारी दूरदर्शन होता था उसमें भी गुमशुदा की तलाश के लिए सूचना और फोटो आते थे तब मैंने अपनी पत्नी को सूचित किया कि ' टीवी में मेरा फोटो आ जाए, इसलिए मैं घर से गायब हो जाता हूं और तुम टीवी में मेरा फोटो भेज कर सूचना कर देना कि' तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा तुम घर वापस आ जाओ'. पत्नी ने रिटर्न गिफ्ट के रूप में बच्चों को लेकर मायके जाने की धमकी दे दी थी, मैं घबरा गया लेकिन मीडिया से मोह नहीं छूटा. मैंने कोशिश की थी अपना फोटो चुपचाप भेज कर दूरदर्शन पर छा जाऊं लेकिन उस समय भी मेट्रो सिटी के लोगों को वहां प्रमुखता दी जाती थी। छोटे सिटी वालों के फोटो नहीं आते थे, इसलिए वह आईडिया मैंने कैंसिल कर दिया था .

कहते है संसार के आकर्षण से कोई नहीं बच सकता है देवता भी यहाँ आने के लिये तरसते हैं. लेकिन मीडिया के कारण इसका आकर्षण कई गुना बढ़ गया है यकीन ना हो तो बेबी बंप से लेकर बुड्ढे बुड्ढीयों के फोटो सोशल मीडिया पर देख लो. लगता है मीडिया ने हमारे जीवन में प्रवेश नहीं किया बल्कि हम मीडिया में प्रवेश कर गए हैं. तभी तो सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक के कार्यकलाप के फोटो सोशल मीडिया पर भरे पड़े है तभी तो रवि और कवि कहीं पहुंचे या ना पहुंचे लेकिन उसी तर्ज पर जहाँ ना पहुंचे दिवाकर वहां पहुंचे फोटोग्राफर की कहावत भी फ़ैल हो गई है. उसके लिये किसी को कहीं पहुँचाने की जरुरत नहीं है बस आपके हाथों में स्मार्ट फोन होना चाहिए और जहाँ चाहे वहां पहुँच कर चाहे तो जिन्दा प्रसारण भी कर सकते हैं तभी तो रियल लाइफ की रील बना बना कर सेलिब्रिटी बनने की होड़ लगी है.

हम जीवन के किसी भी आश्रम में रहते हों मीडिया ही हमारे जीवन को आसरा दे रहा है नेता अभिनेता, खिलाडी, उपदेशक आदि को बिना मीडिया के जीवन निस्सार लगता है भले ही प्रवचन कर्ता संसार को माया मोह कहते रहें. सुबह उठ कर सच्चा भारतीय 'कराग्रे वसते लक्ष्मी' का मंत्र पढ़कर हथेली नहीं देखता बल्कि 'कर मध्ये मोबाइल' लेकर सोशल मीडिया का अपडेट देखता है. लाइक के लालची का विडिओ वायरल हुआ कि नहीं, सब स्क्राइब का सहारा मिला कि नहीं, शेयर की सुनामी आई कि नहीं तब जाकर वह ऊपर वाले को याद करता है.

न्यूज अच्छी है या बुरी है इससे फर्क नहीं पड़ता है बल्कि पेड न्यूज और फेक न्यूज के फर्क ने सोशल मीडिया पर इतना भोकाल मचा रखा है कि पेड और फेक के चक्कर में असल न्यूज पीछे रह जाती है जैसे खोटे सिक्के असली को चलन से बाहर कर देते हैं. सोशल मीडिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तरह आपके जीवन को कितना प्रभावित कर रही है कि शादी विवाह जन्मदिन आदि समारोह और मरे गिरे की खबर इस पर डालते ही विषाणु से संक्रमित मेरा मतलब है वायरल हो जाती है संक्रमण का अर्थ वही है एक से दो, दो से चार इस तरह खबर फ़ैल जाती है ऐ आई की तरह मीडिया ने जीवन इतना आसान कर दिया है कि इधर कोई मरा नहीं कि उधर छुटभैया नेता से विश्व नेता तक ट्विट करके फारिग हो जाते हैं नहीं तो अपना ॐ शांति तो है ही ॐ शांति लिखो और छुट्टी पाओ. इतने सारे, इतने प्यारे, इतने न्यारे मीडिया से जो करे इंकार] उसका हो कैसे बेड़ापार.

महनाज़ नूरी 'माही', शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे सब के सब यूं गले से लगाएं,
यह खुशबू सितारे यह पलकों के साए।।

यह दिलकश नजाऱे यह रंगी फिजाएं,
मोहब्बत के जुगनू बहारों के साए।।

मिटा ना सकेगा ज़माना यह मुझको,
मेरे सर पे मां की दुआओं के साए।।

सताएगा कैसे ग़म-ए- हिज्र उसको,
जिसे घेर लेते हों यादों के साए।।

मिलेगी हमेशा उसी को ही मंज़िल,
जो तूफां से कश्ती को खुद लेके आए ।।

हथेली पे जान अपनी लेकर चली हूं,
कहां तक कोई अपने सर को बचाए।।

यह 'माही' मां की दुआ का असर था,
की खुद मुझको तूफां किनारे पे लाए।।

लघु कथा: माँ

भगवती सक्सेना गौड़, बैंगलोर

जोर जोर से कोई दरवाजा खटखटा रहा था, नीता दौड़ कर गयी और खोला, देखा ट्विंकल खड़ी थी। वह बोली, आंटी बिजली नही है इसलिए जोर से धक्का देना पड़ा, सॉरी, कोई बात नही कहकर उसने गले लगा लिया, तुम बहुत प्यारी हो। ये सुनते ही ट्विंकल की आंखों में आंसू आ गए।

नीता अपने पड़ोस की भाभी रेणुका को बहुत पसंद करती थी, जो कैंसर से कई वर्ष जूझने के बाद पिछले वर्ष, ट्विंकल को छोड़ कर भगवान के पास जा चुकी थी।

आज ट्विंकल जोर जोर से रो रही थी, बहुत पूछने पर बताया, कुछ आंटी और अंकल आये थे, पापा का टीका किया, मिठाई दी और चले गए, घर मे सब बहुत खुश हैं।

मैंने पापा से पूछा, आज क्या है ? उन्होंने बताया, तुम्हारी दूसरी मम्मी आने वाली है।

आंटी, रोक लीजिये, मुझे दूसरी मम्मी नही चाहिए, उसी को सौतेली माँ कहते हैं ना।

मैंने टीवी में फिल्में देखी है, सौतेली माँ अच्छी नही होती, स्कूल में भी कहानियां सुनी है। घर मे दादी, चाची सब है, फिर इनकी क्या जरूरत है। मैंने मम्मी की प्यारी यादो के साथ जीना सीख लिया है।

नीता समझ नही पा रही थी, बच्ची को कैसे समझाए, उसे रेणुका उस घर का सब हाल बताती थी, बीमारी ने तो बाद में खत्म किया, सास और पति के व्यवहार ने पहले ही मार दिया था, इसलिए ट्विंकल के लिए वो बहुत चिंतित रहती थी। अभी साल भी पूरा नही हुआ था और लोग शादी करने के चक्कर मे थे।

आज उसके दिमाग मे अचानक एक विचार आया उसने ट्विंकल से कहा, तुम मुझे कितना प्यार करती हो जवाब मिला ढेर सारा और वो गले लग गयी।

अब बच्ची को लेकर वो उसके घर गयी और उसकी दादी से कहा, अगर बुरा न माने तो एक बात आपसे कहना चाहती हूं, आपकी ट्विंकल इतनी प्यारी है, और आप जानती हैं मेरा अपना कोई नही है।

मैके में लोग है पर उनके लिए मैं सिर्फ एक मेहमान ही हूँ, इस प्यारी सी बच्ची को मुझे दे दीजिए, मैं ट्रांसफर कराकर कहीं और चली जाऊंगी कानूनी रूप से इसे अपनी बेटी बनाउंगी।

दादी सोच में पड़ गयी फिर घर मे मशवरा लेकर बाद में बताते हैं, ये कहा। शाम को ही ट्विंकल खुशी खुशी आयी और बोली आज मैं बहुत खुश हूं, घर मे सबने कहा, कि आपके साथ कहीं घूमने जाना है। आपमे मुझे मेरी अपनी मम्मी का रूप दिखता है, आप बहुत अच्छी हैं।

नमिता गुप्ता 'मनसी' मेरठ, उत्तर प्रदेश

चलें प्रकृति की ओर

(1)
वो जो एक पौधा..
देख रहे हो न
सडक के बांयी ओर
उग आया है स्वतः ही ,
कभी थोड़ा कुचला गया
कदमों से,
फिर संभला,
कभी कुछ.. सूखा,
थोड़ा हरा हुआ,
बस यूं ही क्रम चलता रहा..
वह..
बीज बनता रहा बार-बार
और ,
बढाता रहा भागीदारी
अपने हिस्से की..
पर्यावरण सुधारने में !!

(2)
मकानों के जंगल में
घर कहीं गुम हैं,
इंसान चुप है
पर, शोर बहुत है
संवेदनाओं में,
गलियां सुनसान..
सडकें भरी हुई भीड से
और..
रास्तें हैं कि
भटका रहे हैं हमको !!

(3)
ये कुछ सूखे-कुछ हरे पेड
कब तक पहरा देंगें पर्यावरण का,
कब तक
संभाल सकेगें
मिट्टी को,
और..
कितनें बादल
बना पाएंगे ?
कभी तो सूख ही जाएंगे न ??

(4)
मेरी छोटी सी कोशिश
एक दिन..
बचा लेगी कुछ बूंदें
बारिश की,
छोटा सा
एक टुकड़ा बादल का,
कोई छोटी सी नदी..
या थोड़ा सा समुद्र..
तब,
तुम्हें भी कुछ करना होगा ?
भला एक छोटा सा बादल
बरसेगा कब तक ?
कब तक !!

नारियां अब पुरुषों की परछाई नहीं पारिवारिक समाज का आधार स्तंभ

संजीव ठाकुर

आज स्त्री के संदर्भ में सारी पुरातन अवधारणाओं को बदलने का समय आ गया है । नारी अब घर में पूज्या तो है ही साथ ही वह समाज में अपनी अहमियत की दस्तक देकर देश की सीमा सुरक्षा में भी अपना योगदान दे रही है। राष्ट्र निर्माण में नारी की शिक्षा एवं उनकी सहभागिता भारत का शक्तिशाली भविष्य है, अतः नारी की शिक्षा देश के लिए अति महत्वपूर्ण मुद्दा बन गई है1 वह समय चला गया जब किसी घर में कन्या के पैदा होने से पूरे परिवार में मातम छा जाता था अब भारत में धीरे-धीरे सामाजिक परिवेश में लिंग भेद बदलने लगा है।

स्थिति यह है कि शिक्षित परिवार केवल एक संतान ही पैदा करना चाहती है चाहे वह कन्या हो या बेटा। अब परिवार में कन्या पैदा होने से खुशियां मनाई जाती है और पुरातन सोच अब धीरे-धीरे सामाजिक परिवेश को मस्तिष्क के मूल्यांकन के साथ बदलते जा रही है। पुरुष प्रधान समाज में नारी को पूज्या कह कर बहला दिया जाता था और उसे घर की चहारदीवारी में सीमित कर दिया गया था। यही कारण था कि वे पुरुषों की बराबरी मैं ना आकर बहुत पिछड़ गई और देश की समग्र विकास की स्थिति एकांगी हो गई थी। समाज यह भूल गया था कि जिन हाथों में कोमल चूड़ियां पहनी जाती हैं वही हाथ तलवार भी उठा कर युद्ध में एक वीरांगना की भूमिका निभाती है, इसकी सर्वश्रेष्ठ उदाहरण रजिया बेगम और रानी लक्ष्मीबाई रही हैं। मनुस्मृति पर यदि आप नजर डालेंगे तो पाएंगे कि उसमें स्पष्ट कहा गया है कि जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है। प्राचीन भारत में नारी शिक्षा का काफी प्रचार प्रसार किया गया था इसके कई प्रमाण भी हैं कि वेद की रिचाओं का ज्ञान नारियों को था इसमें कुछ महत्वपूर्ण नारियां समाज के लिए एक उदाहरण बन गई थी उनमें मैत्री, गार्गी, अनुसूया, सावित्री, आदि उल्लेखनीय हैं। वैदिक काल के विद्वान मुंडन मिश्र की पत्नी उदय भारती ने प्रकांड पंडित विश्व विजयी आदि शंकराचार्य को भी शास्त्रार्थ में भरी सभा में पराजित किया था। इसीलिए वेदों और पुराणों में भी उल्लेखित है की बालिका शिक्षा समाज के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला होता है।

महादेवी वर्मा ने नारी शिक्षा को पुरुष शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण बताया था उन्होंने कहा था स्त्री को शिक्षित बनाना एक पुरुष को शिक्षित बनाने से ज्यादा आवश्यक और महत्वपूर्ण है यदि एक पुरुष शिक्षित -प्रशिक्षित होता है तो उससे एक ही व्यक्ति को लाभ होता है किंतु यदि स्त्री शिक्षित होती है तो उससे संपूर्ण परिवार शिक्षित हो जाता है.

उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण बात कही नारी को अशिक्षित रखना समाज के लिए अपराध के समान है। समय के परिवर्तन के साथ साथ नारी का महत्व अब पूरे तौर पर समझा जा रहा है आज समाज तथा देश में नारियां सर्वोत्कृष्ट कार्य कर रही है। समाज हो या विज्ञान या राजनीति अथवा समाज सेवा संपूर्ण क्षेत्र में आज नारियां पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर सर्वश्रेष्ठ कार्य कर रही है। मैडम क्यूरी, कल्पना चावला, इंदिरा गांधी, श्रीमति भंडार नायके, सरोजनी नायडू, कस्तूरबा गांधी जैसी महिलाएं राष्ट्र का मार्गदर्शन करने का काम करती रही है। महात्मा गांधी ने स्वयं कहा है कि जब तक भारत की महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में काम नहीं करेगी तब तक भारत का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। पी वी संधू, वित्त मंत्री सीतारमण स्मृति ईरानी और मंत्रिमंडल में शामिल महिलाएं किसी से पीछे नहीं हैं और सबसे ताजा उदाहरण भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने महिला होकर महिलाओं का नाम राष्ट्र की प्रथम पंक्ति में दर्ज कर देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया है। ।

ख्वाब में हकीकत

ममता सिंह राठौर, कानपुर

सपने जो हम सोते हुए देखते हैं, उनके बारे में आप लोगो की क्या राय है? बताइगा। वैसे मेरी भी समझ में कुछ ज्यादा नहीं है, हां पर यह लगता है कि जो मन में चल रहा होता है वो देखते हैं, फिर कभी बिल्कुल विचित्र सपने होते हैं। खैर, आज हम आप को आज के सपने में देखी हुई घटना का ही विवरण दे रही हूं जो बिल्कुल सच है।

हुआ यूं की आज दोपहर मैं जब सोई तो इस सपने ने ही जगा दिया, तो मन थोड़ी देर तक सोचता रहा फिर हँसी भी आ गई तो सोचा चलो आप लोगों को भी जगाते हैं, हँसाते हैं। अच्छा आज समय का जो दौर है उसके साथ सब लोग क्या चल पा रहे? हां पर कुछ लोग दौड़ रहें है कुछ लोग छलांग लगा र हे हैं, पर कुछ लोग बेचैन भी हैं और सोचते हैं कि हमारी भारत भूमि जहां सत्यवादी हरिश्चंद्र, राजा दशरथ, जैसे लोग हुए हैं बल्कि आज भी किसी विद्यालय में झूठ का समर्थन नहीं होता। सामने से, बाकी आप सब की राय,पर अब आप चलते फिरते देखो कैसे -कैसे लोग, एक छोटी सी बात मन में घूम रही थी।

हुआ यूं की किसी से मेरी यूं ही रास्ते में मुलाकात हुई, नमस्ते की, हमने तो वो खड़ी हो गई बात करती रहीं । मेरे सच्चे लेखन की जिससे वो बहुत प्रभावित हैं, ऐसा बताया उन्होंने, तभी मेरी नजर उनके हाथ में दूध की बाल्टी पर पड़ी तो हमने पूछ लिया कितने में देते हैं दूध? तो जवाब देखिए- हमने पूछा ही नहीं कितने में देता है हम तो जो बिल देता है बस दे देती हूं.... हिहिही। हमें भी हँसी आ गई,अच्छा जी राम राम।

अब अगली कथा जिसने हमें जगा दिया वो यह की सपने में सजी संवरी आठ -दस औरतें दिखीं तो हमने पूछा- आज करवा चौथ है क्या? तो सब की सब देखी होंठ तो हिलाईं पर जवाब नहीं दिया। हमने फिर पूछा तो फिर वही अभिनय की और एक ने कहा हां है करवा चौथ,तभी हमने कुछ सोचते हुए कहा अच्छा पर हमने तो नवरात्रि का व्रत किया है यह मार्च का महीना है करवा चौथ तो अक्तूबर के महीने में होता है। इसके आगे जो बोल कर मेरी आँख खुल गई वो यह कि जो तुम लोग लिपी पुती बैठी हो, बिल्कुल टी वी सीरियल की सास -बहू साजिश, और-सीखो और घर फोड़ो। मंथरा हो पूरी की पूरी। यह सब मेरे सपने में घटी घटना है ।कोई व्यक्तिगत न ले। वैसे सुंदर यह है कि सब हरी साड़ी में सुहागिनी देवियां दिखीं।

हनुमान मुक्त

व्यंग्य: दीनू की किस्मत

खुशी में समय कैसे निकल जाता है, पता ही नहीं चलता। रामखिलावन उर्फ आर के साहब का समय भी बहुत अच्छे ढंग से गुजर रहा था। आजकल उनकी गिनती अच्छे अफसरों में होने लगी थी। अपनी अफसर बिरादरी में उनकी अच्छी पोजीशन थी। अच्छे खासे परिवार में उनकी शादी हो गई। वे पापा भी बन गए। सात साल का उनके एक बेटा है।

सिंह साहब जैसे गुरु के मार्गदर्शन और अपनी कार्यशैली से उनके पास अपना मकान और बैंक बैलेंस भी बन गया है। उनकी ही जाति बिरादरी का एक युवक है दीनदयाल।

अपने बूते अनुसार पढ़ने लिखने के बावजूद, काफी कोशिश करने के बाद भी जब किसी सरकारी महकमे में अपनी जगह ढूंढने में वह नाकामयाब रहा तो उसने असर-कारी स्कूल में देश का भविष्य निर्माता बनाने का कार्य शुरू कर दिया। असर-कारी स्कूल मास्टर की तनख्वाह असर-दायक नहीं होने से दीनदयाल स्कूल समय से पहले और बाद में होम ट्यूशन कर अपना गुजारा करने लगा।

घर में उसकी मां के सिवाय कोई नहीं था। पिता का देहांत बहुत पहले बचपन में ही हो चुका था। दीनदयाल की उम्र तीस साल के पार हो गई लेकिन क्या मजाल जो कोई नवयौवना का पिता अपनी पुत्री का हाथ उनके हाथों में देने का मानस बनाता। बेचारा दीनदयाल इधर-उधर ताक-झांक कर अपना काम चला रहा था। ताकते-झांकते उसकी आंखों को भी अब शर्म आने लगी थी। पर बेचारा क्या करता?

यार, दोस्त जब अपने बीवी बच्चों के साथ हंसते बतियाते निकलते तो उसके दिल पर सांप लोट जाता। मन ही मन उसे अपनी किस्मत पर रोना आता। इसी मोहल्ले का होने के कारण सब उसे दीनू ही कह कर पुकारते। प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने के कारण अब वह दीनू से दीनू मास्साब बन चुका था। दीनू का पढ़ाने लिखाने में मन कितना लगता। यह तो नहीं पता लेकिन उसके द्वारा घर पर पढ़ने वाले बच्चे और उनके मां-बाप उससे बहुत प्यार करते। वह भी घर पर बच्चों को पढ़ाने के अलावा सब कुछ करता। बच्चों को पढ़ाई का सामान लाने से लेकर, घर का सामान लाने में भी वह कोई कोताही नहीं बरतता। जैसे तैसे दीनू अपना गुजर-बसर कर रहा था। पिछले कुछ दिनों से वह आर के सर के यहां भी उनके नौनिहाल को घर पर ट्यूशन पढ़ाने का कार्य करने लगा था। अन्य ट्यूशन वालों के घर पर वह एक घंटे से अधिक समय खराब नहीं करता लेकिन आरके साहब की लोकप्रियता और कार्यशैली से प्रभावित होकर वहां वह दो घंटे तक खराब करने में कोताही नहीं बरतता।

उसका मानना था कि यह इन्वेस्टमेंट है जिसका फल उसे भविष्य में अवश्य मिलेगा। दीनू यहां साहब और साहिबा के पर्सनल कामों को भी पूरी मुस्तैदी से मन लगाकर पूरा करता। आरके साहब, साहिबा और उनका नौनिहाल दीनू की कर्तव्य निष्ठा, वफादारी और मेहनत से खुश थे। साहब को दीनू की दयनीय दशा पर काफी दया आती, जिसे दीनू अच्छी तरह जानता था। अपनी दयनीय दशा को अच्छी दशा में बदलने के लिए वह मनोरथ सिद्ध वृक्ष पर जाकर मनोकामना का धागा भी बांध आया था। मनोरथ सिद्ध वृक्ष की कृपा उस पर आई या उसकी मेहनत, कर्तव्य निष्ठा और वफादारी ने अपना रंग दिखाया कि एक दिन शाम को साहब, दीनू पर कुछ अधिक मेहरबान नजर आए। उन्होंने दीनू को एक अखबार थमाते हुए कहा, दीनू! इस अखबार में हमारे महकमे में बाबू की जगह के लिए विज्ञप्ति छपी है। तुम फॉर्म भर दो। दीनू ने अखबार को इधर-उधर पलटा। बोला,साहब इस नाम का अखबार तो आज पहली बार देखा है । सुनकर साहब के चेहरे पर एक रहस्यमई मुस्कान उभर आई। बोले, जब यह बाजार में आएगा ही नहीं तो तुम देखोगे कैसे? इसका प्रसारण हम जैसे कुछ एक अधिकारियों तक ही सीमित है। तुम्हें आम खाने हैं या पेड़ गिनने। जैसा कहा है, वैसा करो। कल शाम तक फॉर्म तैयार कर दे जाना। अत्यंत गोपनीय काम है। किसी से कुछ कहना मत। दीनू को आम खाने थे। साहब के यहां ट्यूशन के काम को और भी निष्ठा से करने का मन ही मन निर्णय किया। साथ ही साहब के निर्देशानुसार अपना भविष्य संवारने का भी। उनके कहे अनुसार फॉर्म तैयार कर गोपनीय ढंग से साहब को दे आया।

कुछ दिनों बाद साहब ने परीक्षा में बैठने का बुलावा पत्र दीनू को थमा दिया और कुछ गोपनीय निर्देशों के साथ ठीक समय पर परीक्षा स्थल पर पहुंचने का आदेश भी। दीनू ने साहब के आदेशों की अक्षरशः पालना की। सभी काम ठीक-ठाक ढंग से संपन्न हो गया। परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों की कुंजी ,पेपर मिलने के आधे घंटे बाद ही दीनू के पास पहुंच गई और दीनू परीक्षा में पास हो गया। अब आ गई टाइप टेस्ट की बारी। परीक्षा तो टीप टाप कर पास कर ली लेकिन अब टाइप टेस्ट कैसे पास करेगा दीनू। उसे तो टाइप करने की एबीसीडी तक नहीं आती फिर वह टाइप की स्पीड में कैसे पास होगा। मन ही मन वह सोच रहा था।अपना संशय उसने साहब के समक्ष रखा।

साहब ने उसे मस्त रहने को कहा। आर के साहब अब खुद अलादीन के चिराग बन चुके थे। जिनके पास हर समस्या का हल था। पी टीआई सिंह साहब का उन पर पूरा असर था। सिंह साहब की उन पर पूरी कृपा दृष्टि थी ।वे अपने गुरु सिंह साहब से पूरा गुरु ज्ञान ले चुके थे। उन्होंने टाइप टेस्ट वाले दिन दीनू को दिन भर उनके घर पर ही रहने का निर्देश दे दिया कि वह आज घर से बिल्कुल ना निकले। अपने स्कूल से भी आज की छुट्टी ले ले। दीनू, साहब के गोरखधंधे के बारे में सोचता उससे पहले ही उसके दिमाग में पेड़ गिनने के बेवकूफी भरे प्रयास की बजाय आम खाने का विचार आ जाता। उसे आम खाने थे।वह सब कुछ साहब के निर्देशानुसार कर रहा था। टाइप टेस्ट के दिन, दिन भर साहब के घर पर ही रहा ।जो घर का काम वह कर सकता था।उसने पूरी कर्मठता से किया। शाम को उसे छुट्टी मिल गई। टाइप टेस्ट हो गया।कुछ दिनों बाद परीक्षा परिणाम आ गया। दीनू बिना टाइप टेस्ट में बैठे ही टाइप टेस्ट में अच्छे अंको से पास हो गया।बाद में पता चला कि उसकी टाइप टेस्ट की परीक्षा साहब के ऑफिस में काम करने वाले टाइपिस्ट ने दी थी। भगवान ने दीनू की सुन ली। अब वह आर के साहब के ऑफिस में ही सरकारी बाबू बन गया।

मुक्तायन, 93, कांति नगर
मुख्य डाकघर के पीछे, गंगापुर सिटी,
सवाई माधोपुर (राजस्थान)

नमिता गुप्ता मनसी

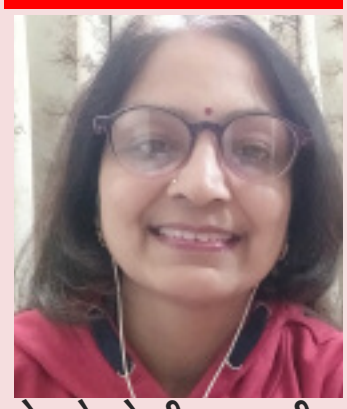

हो सके तो सीखना कभी..

पेड़ों से..बीजों के अंकुरन की भाषा,
चिडियों से..घोंसला बुने जाने की भाषा,
पतंगों से..हवाओं की भाषा,
बादलों से..बारिश की भाषा,
बूंदों से..पानी की भाषा,
नदियों से..अनवरत बहने की भाषा,
तारों से.. आकाश की भाषा,
सूरज से..धूप की भाषा,
चांद से..चमकने की भाषा!!

नवजात से.. किलकारी की भाषा,
चित्रकार से..रंगों की भाषा,
स्त्री से.. उसके दर्द की भाषा
प्रौढ़ से..जीवन की भाषा
प्रेम से..मौन की भाषा,
और
जीवन से..उसके होने की भाषा!

सुनों..
समाहित हैं ये सभी भाषाएं सदियों से
कवियों की कविताओं में!!

मेरठ, उत्तर प्रदेश

आसान विधि से बनाएं बनारसी दम आलू

बनारस के स्वाद की बात ही कुछ और है। एक बार यहां के जायकों को चखने के बाद सालों तक आप उस स्वाद को भूल नहीं सकते। तो आइए ऐसी ही एक डिश करते हैं ट्राय बनारसी दम आलू।

कितने लोगों के लिए : 4

सामग्री : 10-15 उबले हुए (एकदम छोटे आकार के), 2-3 चम्मच सरसों का तेल, 1 चुटकी हींग, 2 हरे लहसुन की पत्तियां कटी हुई, 1 टीस्पून जीरा, 2 टेबलस्पून धनिया, 1 टीस्पून जीरा, 1 टीस्पून सरसों के दाने, 1 टीस्पून सौंफ, अजवाईन, कलौंजी, 4 से 5 साबूत लाल मिर्च, 1 टीस्पून हल्दी पाउडर, 2 टेबलस्पून अमचूर पाउडर, स्वादानुसार नमक, 2 टेबलस्पून हरी धनिया की पत्तियां

विधि :

- उबले आलूओं से छील लें या फिर ऐसे ही बीच से चीरा लगा।
- एक बड़ी लोहे की कढ़ाही रखें और तेल गर्म करें।
- अब उसमें कटी हुई लहसुन की पत्तियां और हींग डालकर भूनें इसके बाद आलूओं को कढ़ाही में डालकर 15 से 20 मिनट तक भूनें।
- इस समय सभी खड़े मसालों को हल्का गर्म करें और दरदरा पीसकर तैयार करें।
- जब आलू एकदम सुनहरा भून जाए तो उसमें पीसा हुआ मसाला, हल्दी, आमचूर पाउडर और नमक डालकर मिलाएं।
- आलू को मसालों के साथ भी पांच मिनट तक अच्छी तरह से मिलाएं लें।
- अब धनिया पत्ती डालें और हरी चटनी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

स्वादिष्ट आलू-मेथी की सब्जी बनाने के लिए आसान स्टेप्स

टेस्टी आलू-मेथी सब्जी बनाने के लिए ये रेसिपी आजमा सकते हैं। आप इसे पराठे या रोटी के साथ सर्व कर सकते हैं।

कितने लोगों के लिए : 4

सामग्री : 4 आलू, 1 कप कटे हुए मेथी, 3-4 लहसुन की कली, 2-3 हरी मिर्च, 1 टी स्पून लाल मिर्च पाउडर, 1 टी स्पून हल्दी पाउडर, 1 टी स्पून गरम मसाला पाउडर, 2-3 चम्मच तेल, स्वादानुसार नमक

विधि : -सबसे पहले आलू धो लें और इसे टुकड़ों में काट लें। अब कढ़ाई में तेल गर्म करें, इसमें मिर्च और लहसुन चटकाएं। फिर कटे हुए आलू और मेंथी डालें। इसे कुछ देर तक पकाएं। जब सब्जी की पानी सूखने लगे, तो नमक और मसाले मिलाएं। कुछ देर तक भून लें, जब आलू पक जाए, तो गैस बंद कर दें।

नया शोध : हार्ट अटैक के बाद अब सेल प्रोग्रामिंग की मदद से दिल को किया जाएगा रिपेयर

वैज्ञानिकों ने सेलुलर प्रोग्रामिंग का लाभ उठाने के लिए प्रोटीन के एक समूह की पहचान की है। जिससे दिल की कोशिकाओं को पहुंचे नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सके। वैज्ञानिकों ने शोध के दौरान पाया कि दिल के दौरे के बाद एक चूहे के दिल को पहुंची चोट की मरम्मत सफल तरीके से कैसे की जा सकती है। अमेरिका के सैनफोर्ड बर्नहैम प्रीबिस में हुई रिसर्च के निष्कर्ष में पाया गया कि इससे हृदय, पार्किंसंस रोग और न्यूरोमस्कुलर बीमारियों सहित कई बीमारियों के उपचार को बदलने में मदद मिल सकती है।

सेलुलर प्रोग्रामिंग क्या है

शरीर की कोशिकाएं चुनी गई जीन्स को चालू और बंद करने की क्षमता रखती हैं। जैसे- वे कैसे दिखते हैं और वह क्या करते हैं, उसे बदलना ही सेलुलर प्रोग्रामिंग का आधार है। यह पुनर्योजी चिकित्सा का एक उभरता हुआ दृष्टिकोण है, जिसमें वैज्ञानिक क्षतिग्रस्त या घायल शरीर के ऊतकों की मरम्मत के लिए कोशिकाओं को बदलते हैं।

सैनफोर्ड बर्नहैम प्रीबिस के असिस्टेंट प्रोफेसर और रिसर्च के लीड लेखक, एलेक्जेंडर कोलास ने बताया कि, हार्ट अटैक के बाद अगर एक व्यक्ति बच भी जाता है, तब भी उसके दिल को भारी नुकसान जरूर पहुंचा होता है, जिसकी वजह से दिल की दूसरी बीमारियों का जोखिम और बढ़ जाता है। उन्होंने कहा, थिअरी में सेलूलर प्रोग्रामिंग, हमें किसी भी कोशिका की गतिविधि और उपस्थिति को नियंत्रित करने का मौका देती है।

यह कॉन्सेप्ट शरीर को खुद को दोबारा ठीक करने में बड़ी मदद प्रदान करता है, लेकिन रीप्रोग्रामिंग तंत्र की बाधाओं ने विज्ञान के लैब से क्लिनिक तक के सफर को रोका हुआ है।

हुई चार चरह के प्रोटीन की पहचान

इस समस्या को हल करने के लिए शोध में चार तरह के प्रोटीन की पहचान की गई, जिसे AJSZ नाम दिया गया है। कोलास ने कहा, इन प्रोटीन्स की एक्टिविटी को ब्लॉक कर, हम दिल को पहुंची चोट को कम कर पाए और दिल के दौरे का शिकार हुए चूहे के दिल के कार्य में 50 फीसदी तक सुधार ला पाए। हालांकि, इस शोध का फोकस दिल की कोशिकाओं पर रहा, लेकिन वैज्ञानिकों को यकीन है कि AJSZ सभी तरह की कोशिकाओं में पाए जा सकते हैं। उन्हें यकीन है कि इस तरीके से कई तरह की बीमारियों का बेहतर इलाज हो सकता है। कोलास ने कहा, यह सफलता इन जबरदस्त जैविक अवधारणाओं को वास्तविक उपचारों में बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस शोध का अगला कदम है AJSZ प्रोटीन्स को काम करने से ब्लॉक करने के कई विकल्पों की तलाश करना। अध्ययन के बारे में, कोलास ने कहा, गहरी चोट के बाद दिल को ठीक करने में मदद कर पाना अपने आप में एक महत्वपूर्ण चिकित्सा आवश्यकता है, लेकिन ये निष्कर्ष चिकित्सा में सेल रिप्रोग्रामिंग के बड़े पैमाने में उपयोग के रास्ता को भी बड़ा बनाते हैं।

त्वचा के साथ शरीर के लिए भी फायदेमंद है अनार का जूस, लेकिन बरतें ये सावधानी

गर्मियां शुरू हो गई हैं और इसी के साथ कुछ ठंडा तरल पदार्थ पीने के लिए हमारी चाह भी बढ़ने लगी है। वैसे तो गर्मी में गला तर करने के लिए हम ज्यादातर ठंडी चीज की तलाश करते हैं, स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए हमें अक्सर कोशिश करनी चाहिए कि हम फल के जूस का ही सेवन करें। हमें ऐसे लिक्विड चीजों की तलाश करनी चाहिए जो हमारे समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद कर सके। अगर आप भी ऐसा ही कुछ ढूंढ रहे हैं, तो अनार का जूस एक बढ़िया ऑप्शन हो सकता है, जिसके एक या दो नहीं बल्कि कई सारे फायदे हैं। यह आवश्यक पोषक तत्वों और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है और इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। चलिए जानते हैं अनार का जूस पीने के फायदे के बारे में-

अनार के जूस के फायदे-

1. वजन घटाने में मददगार

अनार का जूस वजन कम करने में आपकी मदद कर सकता है। अनार पॉलीफेनोल्स और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं, ये सभी आपको मेटाबॉलिज्म बढ़ाने और फैट बर्न करने में मदद करते हैं। यह आपकी भूख को दबा कर आपको लंबे समय तक भरा हुआ भी महसूस करवाते हैं। कोशिश करें इसे अपने मीठे पेय पदार्थों से बदलें क्योंकि उससे आपका तेजी से वजन बढ़ सकता है।

2. पाचन में सहायक

अनार का रस आपके पाचन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और पाचन संबंधी समस्याओं, जैसे कि सूजन आंत्र रोग का इलाज करने में मदद कर सकता है। अनार में मौजूद यौगिक आपकी आंत के लिए अच्छे बैक्टीरिया को प्रोत्साहित कर सकते हैं और पाचन तंत्र में जलन की समस्या को कम कर सकते हैं।

3. कैंसर रोधी गुण होते हैं

राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (एनआईएच) के अनुसार, अनार प्रोस्टेट कैंसर को रोकने या उसका इलाज करने में मदद कर सकता है। कई टेस्ट-ट्यूब शोधों के अनुसार, अनार के रस में ऐसे रसायन होते हैं जो या तो कैंसर कोशिकाओं को मारने में मदद कर सकते हैं या शरीर में उनकी वृद्धि को धीमा कर सकते हैं।

4. हृदय स्वास्थ्य में सुधार करता है

अनार के रस का सेवन आपके हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है और स्ट्रोक और दिल के दौरे जैसी स्वास्थ्य स्थितियों के विकास के जोखिम को रोक सकता है। अनार के अर्क में ऐसे यौगिक होते हैं जो रक्तचाप को कम कर सकते हैं, धमनी की सूजन को कम कर सकते हैं, दिल से संबंधित सीने में दर्द में सुधार कर सकते हैं और पट्टिका के विकास को रोक सकते हैं और नतीजतन दिल का दौरा और स्ट्रोक का खतरा कम हो जाता है।

5. शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट

क्या आप जानते हैं कि ग्रीन टी की तुलना में अनार के रस में तीन गुना अधिक एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है क्योंकि इसमें पॉलीफेनोल्स होते हैं जो आपके शरीर को मुक्त कणों से होने वाले नुकसान से बचाने में मदद करते हैं।

6. गठिया का प्रबंधन करें

अनार का जूस अपने एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों के कारण गठिया को प्रबंधित करने और जोड़ों के स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद कर सकता है। अनार में मौजूद तत्व ऑस्टियोआर्थराइटिस पैदा करने वाले एंजाइम को रोक सकते हैं।

7. त्वचा के लिए अच्छा है

आपकी त्वचा हानिकारक यौगिकों, प्रदूषण और सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी (यूवी) किरणों के संपर्क में आती है, जिससे उन्हें काफी नुकसान पहुंचता है। अनार के जूस का सेवन आपकी त्वचा को यूवी किरणों से बचाने में मदद कर सकता है क्योंकि यह त्वचा में जहरीले यौगिकों के उत्पादन को रोकने में मदद करता है।

8. मूत्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है

अनार का रस आपके मूत्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और गुर्दे की पथरी को रोकने में मदद कर सकता है। एक अध्ययन के अनुसार, अनार का अर्क अपनी एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि के कारण गुर्दे की पथरी के विकास को रोकने में मदद कर सकता है।

अनार के जूस के साइड इफेक्ट

हर अच्छी चीज के साथ कुछ बुराई भी छिपी होती है। अनार के रस में भी कई स्वास्थ्य लाभों के साथ कुछ साइड इफेक्ट्स हैं। इसलिए इससे बचने के लिए कम मात्रा में इसका सेवन करें। इसके अलावा, जिन लोगों को अनार से एलर्जी है, उन्हें इस जूस को पीने से बचना चाहिए। वहीं अगर आपकी दवाइयां चल रही हैं या फिर आप डाइटिंग कर रहे हैं, तो इसे अपने आहार में शामिल करने से पहले अपने चिकित्सक से सलाह जरूर लें।